राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 25.00 संख्या 110
तानाशाह
नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव

जब से यह दुनिया अस्तित्व में आई है, तब से इस पर राज करने की तमन्ना रखने वालों की कमी नहीं रही है। अधिकतर लोग तो इस तमन्ना को दिल में ही दबा लेने में अपनी भलाई समझते हैं। लेकिन कुछ इस इच्छा को पूरा करने के लिए निकल पड़ते हैं, और बन जाते हैं दुनिया के लिए एक अभिशाप। ऐसे कई लोगों ने दुनिया को झुकाने की कोशिश की, लेकिन आखिरकार दुनिया ने उनको ही झुका दिया।... पर कहते हैं कि 'बच्चा' बड़े का बाप होता है, और इसीलिए आज एक बच्चा वह काम करने जा रहा है, जिसको बड़े लोग नहीं कर पाए। वह दुनिया को अपने कदमों में झुकाने जा रहा है–

और बनने जा रहा है ...

तानाशाह

कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विठ्ठल कांबले एवं विनोद कुमार
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

कहते हैं आदमी भी एक जानवर है। दो पैरों वाला बुद्धिमान जानवर। जैविक तौर पर इस बात की सच्चाई प्रमाणित हो जाने के बाद, कुछ लोग अब इसको व्यवहारिक रूप से सिद्ध कर दिखाने में विश्वास रखते हैं–
यही है महानगर के पास स्थित 'नरौरा आणविक बिजली घर'। यह तो अच्छा है कि रेडियो सक्रियता के खतरे के कारण ऐसे प्लांटों को शहर से दूर बनाते हैं।...
...वर्ना हमारा काम जरा मुश्किल हो जाता। अब यहां पर ज्यादा से ज्यादा बीस गार्ड होंगे। उनको तो हम संभाल लेंगे।
अपना काम शुरू कर दो, जजीरा!
ये 'इलेक्ट्रॉनिक डिस्रप्टर' इस बाड़े में दौड़ रही करेंट को भी निष्क्रिय कर देगी, और इसके कटने से बज उठने वाले किसी अलार्म को भी।
तेरा काम हो गया, कश्मीरा!
वेरी गुड! अब मैं इस बाड़े को ही गला देता हूं। 'एसिड-गन' से!
तेज एसिड की फुहार ने बाड़े के स्टील तारों को मोम की तरह गला डाला–
हमलावर घुसे तो चुपचाप थे। लेकिन उनकी किस्मत खराब थी जो उसी वक्त घूमती सर्चलाइट की रोशनी उन पर ही आकर पड़ी–
अरे! कौन हो तुम लोग? रुक जाओ!
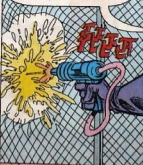
लेकिन आगे बढ़ते कदम नहीं रुके, और गार्ड की उंगली, लाइट मशीनगन के ट्रिगर पर कस गई-

गोलियां चलीं, लेकिन हमलावरों को रोक नहीं पाई-

तड़ तड़ तड़ तड़ तड़

ओह! इन लोगों ने 'बुलेटप्रूफ पोशाक' पहन रखी है। पर इनके चेहरे ढके हुए नहीं हैं। उसी को निशाना बनाता हूं।

लेकिन गार्ड के निशाना बदल पाने के पहले ही-

वह खुद निशाना बन गया-

खचाक

ओह! गड़बड़ हो गई। गोलियों की आवाज पूरे पॉवर स्टेशन में फैल गई होगी।

कश्मीरा का ख्याल सही था। पूरा सुरक्षा तंत्र सक्रिय हो उठा था-

पॉवर स्टेशन पर अटैक किया जा रहा है। अन्दर आने के सारे रास्ते सील कर दो।

पूरे पॉवर स्टेशन के स्टील शटर गिरकर हर 'एंट्री प्वाइंट' को बन्द करने लगे-

घड़ड़ड़

ओह! पर हम इस स्थिति के लिए भी तैयार होकर आए हैं।

ओ माई गॉड! ये तो पूरी तैयारी करके आए हैं! लेकिन इनका इरादा क्या है?
लुटेरों का इरादा जल्दी ही पता चल जाने वाला था। क्योंकि सुरक्षा गार्ड, हमलावरों को रोकने में सफल नहीं हो पा रहे थे-
तुम लोग इन गार्डों को संभालो। तब तक मैं वह काम करके आता हूं, जिसके लिए हम यहां पर आए हैं!
तड़तड़
आऽऽऽह
कश्मीरा को जिसने भी 'आणविक संयंत्र' के बारे में जानकारी दी थी, वह एकदम सटीक थी। कश्मीरा को सही जगह पर पहुंचने में समय नहीं लगा-
आह! यही है 'लेड' के बक्से में बन्द वे 'प्लूटोनियम छड़ें'। जिनके पीछे खिंचता हुआ मैं यहां तक चला आया हूं।
PLUTONIUM
आधा काम तो हो गया। अब इनको राजनगर ले जाकर इन्हें तकनीकी टीम के हाथों में सौंप देना है।
उसके लिए तुमको राजनगर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी...
...क्योंकि तुम्हारी तकनीकी टीम को भी मैं उसी जेल में पहुंचा दूंगा, जहां पर मैं तुमको बन्द करूंगा।
नागराज!

अ...अभी अलार्म बजे तो एक मिनट से ज्यादा नहीं हुआ फिर तू इतनी जल्दी यहां तक कैसे पहुंच गया?
मेरे जासूस सर्प महानगर और इसके आस-पास की हर चीज पर नजर रखते हैं। तुम्हारे अन्दर घुसने से पहले ही मुझे यह मानसिक संकेत मिल चुके थे, कि कुछ लोग 'न्यूक्लियर पॉवर प्लांट' में घुसने की तैयारी में हैं...
...और मैं तुम्हारे यहां पर घुसने से पहले ही यहां के लिए चल चुका था।
आह! मुझे तेरे आने या न आने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा नागराज!...
...क्योंकि मैं एक पूरी 'मिलट्री प्लाटून' से लड़ने की तैयारी करके आया हूं।...
...तू अकेला भला मुझे क्या रोकेगा!
ओह! तो तू मुझ पर गोली चलाएगा! चलाले! ये इच्छा भी पूरी कर ले!
और अभिमान करने का नतीजा तो बुरा ही होता है-
आह!
मेरा शरीर जल रहा है!
नागराज को एक पल के लिए अपनी शक्ति पर अभिमान हो गया-
इस बंदूक से गोली नहीं, एसिड निकलता है नागराज! मैं जानता हूं कि तुझ पर गोलियां असर नहीं करतीं! अब तू जब तक मुझे रोकने लायक ही रहेगा...

...तब तक मैं अपना काम पूरा करके...
...यहां से निकल लूंगा।
ओह! तेजाब से हमले की उम्मीद मैंने नहीं की थी। यह काफी चालाक निकला। लेकिन मेरी सर्प शक्तियां घाव को काफी तेजी से भर रही हैं। जल्दी ही मैं इस लायक हो जाऊंगा कि इसके पीछे जा सकूं।
बाहर कॉरीडोर में गार्डों और हमलावरों के बीच में खूनी संघर्ष जारी था—
बस! काम हो गया है। अब यहां से निकलने की कोशिश करो।
तड़ तड़ तड़
गोलियां, गार्डों के बदन को छेददेने के लिए, हथियार की नाल से निकलीं—
लेकिन किसी और के बदन को छेद गईं—
?
एक मिनट कश्मीरा! इन गार्डों को खत्म कर लूं। वैसे भी गोलियां बचाकर ले जाने का क्या फायदा है।
एक ऐसे बदन को जिस पर गोलियों का असर नहीं होता था—
क्योंकि उसके शरीर के सूक्ष्म सर्प किसी भी घाव को तुरन्त भर देते थे—
नागराज! तू मेरी उम्मीद से जल्दी संभल गया। जजीरा, मामूल, अपने चेहरों पर मास्क पहन लो।
मैं 'स्मोक-बम' पटकने जा रहा हूं।
फटाक

कुछ ही पलों में पूरा गलियारा, गाढ़े धुएं से भर गया-

ओफ्! हाथ को हाथ सुझाई नहीं दे रहा है। ऐसे तो ये आतंकवादी भाग निकलेंगे और मैं इनको रोक नहीं पाऊंगा!

एक मिनट! अगर दिख नहीं रहा है तो मुझे अपनी दूसरी इंद्रिय का प्रयोग करना चाहिए। स्पंदन यानी 'वायब्रेशन' महसूस कर सकने की शक्ति!

इस रास्ते से आतंकवादी जरूर भाग कर जाएंगे। और मैं अपने सीने के सफेद शल्कों से उनके कदमों के भागने की आहट को महसूस भी कर सकता हूं...

...और उनके भागने की दिशा का भी अंदाजा लगा सकता हूं।

जमीन पर छाती के बल चिपका नागराज, सांप की गति से एक तरफ बढ़ने लगा-

'ऑपरेशन प्लूटोनियम' सफल रहा जजीरा। अब हमको कोई रोक नहीं सकता!
लेकिन कभी-कभी एकदम सामने दिखने वाली मंजिल भी-
एक पल में काफी दूर नजर आने लगती है-
अब मैं तुझे बताता हूं कश्मीरा...
कड़ाक
...कि जब जान निकलती है तो कैसा लगता है!
नागराज की फुंकार प्राणलेवा स्तर की तो नहीं थी-
कमाल है। तू बेहोश नहीं हुआ! लगता है तू नशा बहुत ज्यादा करता है। इसीलिए हल्की विषफुंकार को पचा गया।
अब मैं तुझ पर इससे तेज फुंकार छोड़ूंगा और तब तक छोड़ता रहूंगा, जब तक तू बेहोश नहीं हो जाता!
लेकिन फिर भी कश्मीरा को अपने सारे शरीर से ताकत गायब होती हुई सी महसूस हुई-
आह! मैं सांस नहीं ले पा रहा... हूं। मे... मेरा दम घुट रहा है।

लेकिन नागराज के विष फुंकार छोड़ पाने से पहले ही कश्मीरा के हाथ, बड़ी तेजी से हिले–
और 'सक्रिय प्लूटोनियम' की छड़ नागराज के शरीर से आ सटी–
ये 'एक्टिव प्लूटोनियम' की छड़ें हैं नागराज ! इनसे तीव्र रेडियो एक्टिविटी निकलती है। मैंने तो एंटी रेडिएशन सूट पहना हुआ है इसलिए मुझ पर रेडिएशन का असर मामूली सा होगा, लेकिन तुम पर इस रेडिएशन का घातक असर जरूर होगा...
... क्या असर होगा, यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन असर होगा जरूर !
आह ! जैसे कैंसर के रोगियों में रेडिएशन का प्रयोग कोशिकाओं को नष्ट करने के लिए किया जाता है...
... वैसे ही यह रेडिएशन मेरे शरीर के सूक्ष्म सर्पों को तेजी से नष्ट कर रहा है। मुझ पर कमजोरी छा रही है...
... क्योंकि मेरी नागशक्ति का मुख्य स्रोत ये सूक्ष्म सर्प ही हैं।
हा हा हा ! जीत उसी की होती है, जो आखिरी लड़ाई जीतता है। और वह विजेता कश्मीरा है।
ये भाग रहा है, और इस कमजोरी की हालत में मैं इसका पीछा नहीं कर पाऊंगा ।...
... विषयक ! तुम सूक्ष्म रूप में इस कश्मीरा के साथ जाओ, और मुझे मानसिक संकेत भेजते रहना !
महानगर में घटे इस घटनाक्रम का दूसरा हिस्सा–

राजनगर में खेला जाना था-
इस उजाड़ चर्च को मैंने खरीद कर इसमें पूरे एक साल तक इसी पल के लिए मेहनत की है...
लेकिन फिलहाल राजनगर में कुछ और ही घटनाक्रम जन्म ले रहा था-
... क्योंकि आज से पन्द्रह साल पहले जब मेरे आध्यात्मिक गुरू और तुम्हारे पिता महान 'एक्जौरसिस्ट' यानी ओझा 'गिओटो' जब अपना शरीर त्याग रहे थे, तब उन्होंने यह वादा किया था कि आज के दिन वे अपने आत्मिक रूप में एक बार फिर पृथ्वी पर आएंगे, और दुनिया को सत्यमार्ग दिखाएंगे...
R.I.P.
ओह! मैं दिन रात तुमसे सवाल पूछा करती थी, पर तुमने कभी जवाब नहीं दिया। कम से कम मुझे पहले ही बता दिया होता, वीटो!
तब शायद तुम मेरी पत्नी होकर भी मुझे पागल समझती! लेकिन आज मैं यह साबित कर दूंगा कि मेरे गुरू का वादा झूठा नहीं था!
... लेकिन उनकी शर्त यह थी कि वह हमारे बेटे के शरीर को ही पृथ्वी पर आने का माध्यम बनाएंगे। इसीलिए मुझे तब तक इंतजार करना पड़ा जब तक हमारा बेटा पैदा होकर बड़ा नहीं हो गया।...
... मरने के कुछ दिनों बाद मेरे स्वप्न में आकर उन्होंने इस चर्च का पता बताया था, जिससे उस दुनिया का द्वार खुलता है, जिसे लोग आत्माओं और पराशक्तियों की दुनिया कहते हैं।
इसीलिए मैंने इंग्लैंड में सिर्फ इसीलिए दिन-रात काम किया, ताकि मैं पैसा जोड़कर इस चर्च को खरीद सकूं।
लेकिन पिताजी की आत्मा क्या हवा से निकलकर हमारे बेटे जीवो के शरीर में घुस जाएगी?
सच पूछो तो मुझे अभी भी यकीन नहीं हो रहा है। वैसे जीवो को तो कोई खतरा नहीं है न?

जीवो मेरा भी बेटा है, मारिया! मैं उस पर कोई खतरा आने ही नहीं दूंगा। वैसे भी गुरू गिओटी की आत्मा जीवो के मुंह से अपनी बात कहेगी, उसके शरीर पर कब्जा नहीं करेगी। आखिर जीवो उनका भी तो नाती है।
और गिओटी की आत्मा हवा में से नहीं आएगी। उसके लिए मुझे एक खास यंत्र बनाना पड़ा है। उस यंत्र के पुर्जे और इसके बनाने की विधि भी मुझे गुरू गिओटी ने कई स्वप्नों में थोड़ा-थोड़ा करके बताई थी।...
और देखो! ये है वह यंत्र जिसको बनाने में मैं एक साल से जुटा था। और जिसको बनाने के बाद मैंने तुमको और जीवो को इंग्लैंड से यहां बुलाया था...
...अब जीवो भी यहां पर है, और वह समय भी आ गया है जिसकी मुझे प्रतीक्षा थी। अब मैं गुरू गिओटी की आत्मा का आह्वान करना शुरू करता हूं।
ओहो!
जल्दी शुरू करो न पापा! मैं खुद भी नानाजी से मिलने के लिए बेताब हो रहा हूं!
एक रोमांचक प्रयोग, अपने पूरे उफान पर आ रहा था—
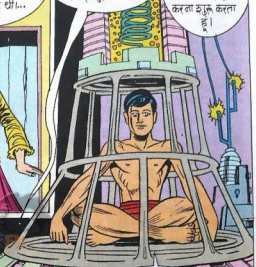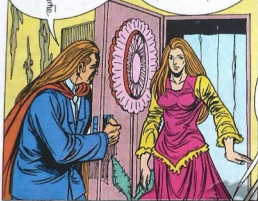
और पास में ही–
तुमने माल छिपाने के लिए जगह तो बहुत अच्छी ढूंढी है, एरिया कमांडर बेहार्थ!
सिर्फ अच्छी ही नहीं सुरक्षित भी है यह जगह, स्टेंट शमशीर! तुम ठीक मेरे पीछे-पीछे आना। एक कदम भी इधर-उधर रख दिया तो पूरा बदन चिंदियों में बिखर जाएगा!
क्योंकि इस कब्रिस्तान में कुछ जगहों पर मैंने 'लैंड-माइन' यानी बारूदी सुरंगें बिछा कर रखी हुई हैं। ताकि अगर किसी को यह पता भी चल जाए कि यहां पर कुछ महत्वपूर्ण चीज छिपाई गई है... तो भी वह उस तक न पहुंच सके!
अच्छा है। अब तुम पुर्जों को निकालो। कश्मीरा के प्लूटोनियम रॉड लेकर यहां पहुंचते ही मैं पुर्जों की फिट करना शुरू कर दूंगा। और एक-दो घंटों में बन जाएगा...
शीऽऽऽ। कुछ मुर्दों के भी जुबान होती है। मैं समझ गया कि तुम क्या कहना चाहते हो! मसूद, फावड़ा उठा और खोदना चालू कर!
किसी भी कब्र के खुदने से अन्दर से सड़ा-गला मांस निकलने की उम्मीद बंध जाती है–
...उन गिद्धों को जो अपने शिकार को पाने के लिए उसे मार भी सकते हैं और उसके लिए मर भी सकते हैं–
ओह! दूर हट!
हट!
इन गिद्धों के व्यवधान डालने से कब्र खोदकर सामान निकालने में समय लगेगा। और मैं यहां पर ज्यादा देर रुककर पकड़े जाने का खतरा मोल नहीं ले सकता।
धांय
सि या

अपने भोजन की तलाश में आए भूखे और बेजुबान पक्षियों के शरीर में गोलियां धंसनी शुरू हो गईं-
कुछ गिद्ध तो वहीं धराशायी हो गए-
धांय
धांय
लेकिन एक घायल गिद्ध अपनी जान बचाकर उड़ चला मदद मांगने के लिए-
क्योंकि वह समझ गया था कि ये लोग लाश दफनाने वाले नहीं, बल्कि जिन्दा को लाशों में बदलने वाले हैं-
और राजनगर में रहने वाले हर पशु-पक्षी की तरह वह गिद्ध भी जानता था कि उसे मदद कहां से मिलेगी-
तुम्हारे जैसा दृढ़ निश्चयी इंसान मिलना मुश्किल है ध्रुव! तुमने बिना किसी सहारे के सिर्फ अपने पिता श्याम को ही बेगुनाह नहीं सिद्ध किया, बल्कि दुनिया को भी आणविक मिसाइलों के खतरे से बचा लिया।
लेकिन मुझे एक बात सही-सही बताना ध्रुव! अपने दादा और ताऊ के मिल जाने के बाद भी तुमने जो हमारे ही साथ रहने का फैसला किया है, उसके पीछे कोई मजबूरी तो नहीं है न?
एक मजबूरी तो है मम्मी! अब तक दादाजी और ताऊजी मेरे बगैर ही रह रहे थे और आगे भी रह ही लेंगे। लेकिन मैं आप लोगों के बगैर नहीं रह सकता। बस, यही मेरी मजबूरी है!
इसको प्यार की मजबूरी कहते हैं बेटे! तू क्या समझता है कि हम तेरे बगैर रह सकते हैं?
क्या मम्मी? तुम भी इमोशनल हो जाती हो। बिल्कुल फिल्मी मां की तरह!
इतना अच्छा मौका मिला था भइया को फुटाने का और तुमने उसे गंवा दिया।
अच्छा! अब तू मुझे घर से भगाएगी?

जरा ठहर तो जा चार-पांच साल। फिर मैं तुझे घर से भगा दूंगा। तेरे दूल्हे के घर तक।
अरे भाग वाए श्वेता को भगाने वाले। और ज्यादा चबर-चबर की तो ऐसी भाभी ढूंढूंगी कि बोलना ही भूल जाओगे!
तभी-
अरे! कोई दरवाजा खटखटा रहा है। घंटी क्यों नहीं बजाई?
जाओ, जाओ, जाकर देखो, कहीं तुम्हारे होने वाले रिश्तेदार तो मिलने नहीं आए हैं।
टक टक
लेकिन दरवाजा खोलते ही ध्रुव चकित हो गया-
ओ माई गॉड! यह तो एक गिद्ध है। और काफी घायल है। गोली का घाव लगता है।
इसे अंदर ले चलो। मैं घाव साफ करके पट्टी बांध देती हूं।
लेकिन तुम जा कहां रहे हो भइया?
शहर के बाहर बने पुराने ईसाई कब्रिस्तान में। वहां कुछ लोग कब्रें खोद रहे हैं। उन्होंने ही इस गिद्ध पर गोली चलाई है।
राजनगर का रखवाला फरिश्ता निकल पड़ा था, अपराध की एक और जड़ उखाड़ने के लिए-
थोड़ी देर में ही गिद्ध की हालत काफी संभल गई थी-
गोली गर्दन को छूती हुई निकली थी। घाव गहरा नहीं था। पर इस पर गोली चलाई किसने और क्यों?
श श श। यह कुछ कहना चाह रहा है।
हां हां! मैं समझ रहा हूं।
ओह! मैं अभी वहां जाकर सारा मामला समझकर आता हूं। तब तक तुम आराम करो।

लेकिन वह अच्छी तरह से समझ रहा था कि वह एक बड़े खतरे की तरफ बढ़ रहा था-
वे कब्र खोदने वाले मामूली अपराधी नहीं लगते। कब्र खुदने के तो कई वाकये होते हैं। लेकिन अब तक गिद्ध के परेशान करने पर गोली चलाने का कोई मामला प्रकाश में नहीं आया। जरूर उनके कब्र खोदने के पीछे कोई बड़ा कारण है। मुझे पहले मामला समझना होगा, और फिर बीच में कूदना होगा।
मामला सचमुच गंभीर था-
हां! यही है वह पुर्जों वाला बक्सा जो हमारे देश की गुप्तचर एजेंसी ने तुम अफगानियों को दिया था।...
... ताकि इसके जरिए तुम लोग जम्मू और कश्मीर में आतंक का वह भीषण नाच करो, जैसा हिन्दुस्तान वालों ने आज तक नहीं देखा हो।
ISI
एजेंट शमशीर के कुशल हाथों ने पुर्जों को तेजी से जोड़ना शुरू कर दिया-
और लगभग एक घंटे की कड़ी मेहनत के बाद उन पुर्जों ने एक खतरनाक यंत्र का रूप ले लिया था-
तुम्हारा आधा काम हो गया है बेहाथ। अब इसमें प्लूटोनियम रॉड डालने के बाद कुछ पुर्जे और कसने होंगे। और फिर तैयार हो जाएगा तुम्हारा 'मिनी प्लूटोनियम बम'। जो जब फटेगा तो पांच किलोमीटर दायरे का इलाका समतल हो जाएगा!

चुपकर, शमशीर, चुप कर! मैंने कहा न कि मुर्दों की भी जुबान होती है...

सॉरी, बेहाथ। मुझसे खुशी दबाई नहीं गई। चिल्लाने का मन करने लगा। पर ये कश्मीरा अब तक क्यों नहीं आया? कहीं वह फंस तो नहीं गया?

पहली बात तो कश्मीरा कभी फंस नहीं सकता, शमशीर...

और दूसरी बात कि अगर वह फंस भी गया तो भी उसको मिशन पूरा करने से दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती।

वह मर भी गया तो भी उसका मुर्दा, प्लूटोनियम रॉड लेकर यहां पर आएगा।

अच्छा! तो ये कब्र तुमने उसके लिए ही खोदी है, बेहाथ!

कौन?

मैं! सुपर कमांडो ध्रुव! तुम जैसों की जात का कट्टर दुश्मन! तुम जैसे भाड़े के टट्टुओं की आंखें निकालने के लिए ही जन्म हुआ है मेरा!

तू... तू तो राजनगर से बाहर गया हुआ था★... खैर जिसकी मौत जहां लिखी हो, वहां पर तो उसे आना ही पड़ता है।

अब वहां से दूर क्यों खड़ा हुआ है? पैरों में मेंहदी लगी है क्या? आ... आकर हमें पकड़ ले!

यह मुझे उकसाने की कोशिश कर रहा है। ताकि मैं क्रोध में आकर इसकी तरफ लपक पड़ूं। पर क्यों?

जरूर यह मेरा ध्यान बंटाना चाहता है। इसकी तरफ दौड़ना खतरे का काम हो सकता है...

...इसलिए हवाई रास्ता पकड़ना ज्यादा सुरक्षित साबित होगा।

तीनों पलभर के लिए तो, ध्रुव की इस हरकत पर ठगे से रह गए—

★ यह जानने के लिए पढ़ें : जिगसा

कहानी 19 वें पृष्ठ से जारी

लेकिन ये लोग मामूली गुंडे नहीं थे। बल्कि युद्ध की आग में तपे हुए बिगड़े सैनिक। और गहन ट्रेनिंग पास हुए जासूसी एजेंट थे।
सबसे पहले मसूद का हाथ हरकत में आया-
और तेजी से चक्र की तरह घूमता आरीदार चाकू, नाइलीस्टील की डोरी को रेत गया-
शाबाश मसूद! अब यह डोरी इसका वजन संभाल नहीं पाएगी, और यह सीधा लैंड माइन पर गिरेगा।
दोनों में से सिर्फ एक बात सही थी-
डोरी टूट गई-
लैंड माइन! यानी इन आतंकवादियों ने यहां 'लैंड माइनें' फिट कर रखी हैं। इसलिए यह मुझे अपनी तरफ लपकने के लिए उकसा रहा था।
और मसूद की छाती पर दर्जनों ड्रम एक साथ बज उठे-
लेकिन ध्रुव का शरीर 'लैंड माइन' पर नहीं गिरा। हवा में ही ध्रुव ने अपने शरीर को
होश संभाले रखने का तो सवाल ही नहीं उठता था-
मसूद हवा में उड़ता हुआ, एक तरफ दूर जा गिरा-

और साथ ही साथ, ध्रुव के पैर भी जमीन से टकराए-
लेकिन इससे पहले कि ध्रुव अपना संतुलन बना पाता, एक कराटे चाप उसकी गर्दन से टकराई-
ताड़
और एक रिवॉल्वर की नाल उसके सर पर तन गई-
ये कब्र शायद तेरे लिए ही खोदी गई थी लड़के!...
...तू दुनिया का पहला ऐसा इन्सान होगा जिस की कब्र मरने से पहले ही खुद गई हो!
अगर ऐसा है तो मैं अपने आप ही इस कब्र में घुस जाता हूं।
धाँय
तूने बहुत बड़ी गलती कर दी है ध्रुव! अपनी जिन्दगी की आखिरी गलती। अब तू चूहे की तरह इस गड्ढे में फंस गया है।
अब तुझे मरने से... हैं?
धांय
यह फावड़ा बचा सकता है। मैं इसे देखने के बाद ही इस 'कब्र' में घुसा था, शमशीर!

और यह फावड़ा सिर्फ मुझे बचाएगा ही नहीं...
आह!
...बल्कि तुमको...
...पिटवाएगा भी।
धाड़
अब बोलो, एरिया कमांडर बेहाथ। तुमको बेहाथ से बेहाल कर दूं या फिर तुम चुपचाप चलते हो मेरे साथ।
शमशीर और मसूद जैसे चूहों को पीटकर तू शेर बन रहा है ध्रुव? जानता है मुझको बेहाथ क्यों कहते हैं?...

...क्योंकि अफगानिस्तान में, सोवियत सैनिकों से लड़ते वक्त मेरे दोनों हाथ टैंक के नीचे आ गए थे। मेरे हाथ तो काट देने पड़े...

...लेकिन मेरे पाकिस्तानी आकाओं को अभी भी मेरे युद्ध कौशल की जरूरत थी। क्योंकि वह सिर्फ मैं ही था जो रूसी सैनिकों को अफगानिस्तान से भगाकर, वहां पर पाकिस्तान की कठपुतली सरकार बैठाने का दम रखता था।...

...पाकिस्तान सरकार ने मुझे अपने खर्चे पर अमेरिका भेजकर मेरे ये नए हाथ लगवा दिए। फर्क सिर्फ इतना था कि इन हाथों से मैं न तो कुछ खा-पी सकता था और न ही कुछ उठा सकता था... पर दुश्मन के चिथड़े जरूर उड़ा सकता था।

मेरे इन हाथों में इतना बारूद भर गया था जो अफगानिस्तान में बैठे हर रूसी सैनिक के चिथड़े उड़ा देने की काफी था।

मेरी इन्हीं भुजाओं की वजह से रूसी वापस रूस भाग खड़े हुए। अफगानिस्तान में मेरा काम खत्म हो गया तो मेरे आकाओं ने मुझे कश्मीर में भेज दिया।...

...हिन्दुस्तानी फौजों को कश्मीर की धरती से बाहर खदेड़ने के लिए।...

...लेकिन यह इतना आसान साबित नहीं हुआ। इसीलिए हमने लोहार वाला एक वार करने की सोची...

...और इसी सोच का नतीजा है यह आधा बना प्लूटोनियम बम! जो जब फटेगा, तो पूरा हिन्दुस्तान बहरा हो जाएगा!

... क्योंकि तुम इतना हल्ला कर रहे हो कि मेरे कान तो फट ही जाएंगे, और शायद साथ-साथ कब्र में सो रहे मुर्दे भी जगाकर खड़े हो जाएंगे।
मुर्दों की बड़ी फिक्र है तुझे? होनी भी चाहिए!...
... क्योंकि थोड़ी देर में तू भी इनकी ही जमात में शामिल होने वाला है। तू लाख बचने की कोशिश कर ले...
... लेकिन बेहाथ के हाथों में ऐसे-ऐसे हथियार भरे हुए हैं, जो पहाड़ों का सीना चीरकर सुरंग बना सकते हैं।
कब्र के पत्थर के टुकड़े-टुकड़े हो गए-
धड़ाम
ध्रुव अगर ऐन वक्त पर हट नहीं जाता, तो उसके शरीर का भी यही हाल होता-
ऐसे बचते रहने से कोई फायदा नहीं है। देर-सवेर कोई न कोई गोली या गोला मेरे शरीर को ढूंढ ही लेगा। इसकी बन्दूकों का मुंह खामोश करना पड़ेगा।...
... पर कैसे... आहा! यह कब्र पर लगा क्रॉस। गोले के धमाके से इसका ऊपरी हिस्सा टूटकर नुकीला हो गया है।...
... शायद भगवान अपने इसी चिन्ह के जरिए मेरी मदद करना चाहते हैं। इस बेहाथ की गन से निकले गोले, जहां टकराते हैं, वह चीज टुकड़े-टुकड़े हो जाती है।... अगर यह गोला चलने के पहले ही इसकी गन में फंस जाए तो इसकी बाजू रूपी गन का भी यही हाल होगा।
सांय
ध्रुव ने पूरी ताकत से अपना हाथ घुमाया-

निशाना मुश्किल था। और मौका सिर्फ एक। लेकिन ध्रुव ने न तो मौका चूकना सीखा था और न ही निशाना चूकना-
क्रॉस का नुकीला हिस्सा, बेहाथ की गन के मुहाने में धंसता चला गया। बेहाथ अभी भी ध्रुव के चिथड़े उड़ा देने के लिए गोले दागने की प्रक्रिया को बन्द नहीं कर पाया था-
प्लॉप
?
गोला दगा! लेकिन नाल से बाहर निकलने की कोशिश में क्रॉस के नुकीले सिरे से जा टकराया-
एक धमाके के साथ क्रॉस के भी टुकड़े-टुकड़े हो गए-
इस धमाके ने बेहाथ के पूरे शरीर को ऊपर से नीचे तक हिला डाला-
और जब तक बेहाथ अपने घूमते सिर और झनझनाते बदन को काबू में कर पाता-
और बेहाथ की गन के भी-
ध्रुव ने इस झनझनाहट को और भी बढ़ा दिया-
तेरी एक गन तो बेकार हो चुकी है बेहाथ, और तेरी दूसरी गन के कार्ट्रिजों को मैं निकाल लेता हूं। अब तेरी दोनों गनें बेकार हो गई हैं...
आह! कमाल है तू! जो काम रूसी सेना नहीं कर पाई, वह तूने कर दिया।
लेकिन मामला अभी निपटा नहीं था। असावधान ध्रुव के पीछे मौत, खामोशी से बढ़ने की तैयारी कर रही थी-

लेकिन ध्रुव के मित्र असावधान नहीं थे। इन धमाकों से पेड़ की सूखी डालों पर सो रहे इक्का-दुक्का पक्षी जागकर यह तमाशा देख रहे थे-
और उनका अपने दोस्त को मरने देने का कोई इरादा नहीं था-
मसूद इस अचानक हुए हमले से बचने के लिए कुछ कदम पीछे हटा-
और उसका पैर वहां पर पड़ गया, जहां पर नहीं पड़ना चाहिए था-
लैंड माइन का ट्रिगर दब गया था-
और मसूद के पैर उठाते ही-
वह इस दुनिया से ही उठ गया-
इस अचानक हुए घटनाक्रम से ध्रुव का ध्यान कुछ देर के लिए बेहाथ पर से हट गया-
और यह असावधानी उसको काफी महंगी पड़ी-
लड़खड़ाता हुआ ध्रुव, अपना संतुलन बनाने की कोशिश में कई कदम पीछे चला गया-
और इस बार लैंड माइन के ट्रिगर पर पैर रखने की बारी उसकी थी-
?
खट
बेहाथ की सलामत गन से गोलियां तो ध्रुव ने निकाल दी थीं,
तो इस्तेमाल किया जा ही सकता था-

अरे वाह! यह तो अपने-आप ही फंस गया। अब यह अपना पैर हटा नहीं सकता, यानी यह हिल भी नहीं सकता!
ओह! तुझे भी होश आ गया शमशीर! अब हम पत्थर मार-मार कर इसकी जान लेंगे और यह छुपने के लिए भाग भी नहीं पाएगा!
इधर ध्रुव एक अजीबोगरीब स्थिति में फंसा हुआ था-
और एकदम बगल में- चर्च के अन्दर ग्रिओटो की आत्मा को जीवो के शरीर में प्रविष्ट कराने की प्रक्रिया जोर पकड़ चुकी थी-
यह धमाका कैसा था, वीटो?
कहीं हमारे प्रयोग के कारण कोई गड़बड़ी तो नहीं हो रही है?
नहीं, मारिया! अभी यह प्रक्रिया उस स्तर पर नहीं पहुंची है। यह धमाका किसी और ही कारण से हुआ है।
बाहर किसी किस्म का युद्ध हो रहा है मारिया! और उस युद्ध का असर यहां तक भी आ सकता है।
मुझे प्रक्रिया को तेज करना पड़ेगा। वर्ना अगर प्रयोग पूरा होने से पहले कोई व्यवधान आ गया, तो न जाने क्या अनर्थ हो जाए!
वीटो के हाथ तेजी से मशीन के ऊपर घूमने लगे-
लेकिन फिलहाल इस 'युद्ध' में गोलाबारी होने की उम्मीद नहीं थी-
क्योंकि अभी पत्थरों से वार होने वाला था। लेकिन इससे पहले कि वे पत्थर ध्रुव का सिर फाड़ने के लिए हवा में तैरते-
बेहाथ! कमांडर बेहाथ!
ये... ये तो कश्मीरा की आवाज है!...
... यानी मेरा शेर अपना काम पूरा करके आ गया!

कमोडर! ये रही 'प्लूटोनियम रॉड्स'!
इनको पाने के लिए मुझे नागराज से टकराना पड़ा! लेकिन वह भी मुझे रोक नहीं पाया।
तुझे तो मौत भी नहीं रोक सकती है कश्मीरे! ला! जल्दी से छड़ें ला। ताकि शमशीर इसको फिट करके 'प्लूटोनियम बम' पूरा बना सके!
शमशीर के अनुभवी हाथ बम को तेजी से पूरा करने लगे–
हा हा हा। देख ले भारत के रखवाले तेरी आंखों के सामने ही भारत के चिथड़े उड़ाने वाला बम बन रहा है।
और तू कुछ नहीं कर सकता!
ध्रुव सचमुच कुछ नहीं कर सकता था। कुछ ही देर में उसकी आंखों के सामने ही बम तैयार हो चुका था–
ये तेरी आंखों के सामने तेरी जिन्दगी का आखिरी सीन चल रहा था। अब तू 'दएंड' भी देख ले!
लेकिन तभी–
सांप! ये...ये सांप कहां से आ गए?
दोनों तरफ मौत थी। हिलो तो भी और न हिलो तो भी–
आ गए हैं सांप तो इनके साथ ही आया होगा तुम्हारा बाप...

नागराज!
तुम यहां तक कैसे आ गए?
इस कश्मीरा के भागते वक्त मैंने इसके साथ एक सूक्ष्म सर्प को भेज दिया था। उसी के मानसिक संकेत का पीछा करते-करते मैं यहां आ गया!
धड़ाक
इससे पहले कश्मीरा ने मुझ पर प्लूटोनियम छड़ की रेडियो धर्मिता का प्रयोग करके मुझे बेबस कर दिया था। इसलिए मैं प्लूटोनियम छड़ों को फिट करके बन्द होने का इन्तजार कर रहा था...
...मैं यह भी समझ चुका हूं कि तुम लैंडमाइन पर पैर रखा होने के कारण हिल नहीं सकते।...
...पर इन कीड़ों को मसलने के लिए मुझे किसी मदद की जरूरत नहीं पड़ेगी!
धम्म
धड़ाक

और चर्च के अन्दर- आत्मा की आह्वान करने. की प्रक्रिया अपनी समाप्ति की ओर बढ़ रही थी-
आओ, गुरु गिओटी की आत्मा, आओ, मेरी पुकार सुनो। मैं तुम्हारे लोक से इस लोक में आने का रास्ता खोल रहा हूं। आओ, और अपने नाती जीवो के शरीर में प्रवेश करो।
वीटो की पुकार के जवाब में आत्मिक ऊर्जा की किरण वातावरण में फैलने लगी-
आसमान में काले बादल घिरने लगे। बिजली चमकने लगी। ठंडी हवा बहने लगी-
और वातावरण में एक कोलाहल सा गूंजने लगा-
अरे! एकाएक मौसम कैसे बदल गया?
इससे पहले कि नागराज कुछ समझ पाता, बिजली की एक लहर तेजी से कौंधी-
और नागराज के ठीक बगल में खड़े सूखे पेड़ पर आ गिरी-
ड़ड़ड़-
ड़ ड़ड़ड़
पेड़ नागराज के शरीर से आटकराया, और नागराज पेड़ के नीचे दबकर जमीन पर आ गिरा-
नाति

इस अचानक हुए हादसे ने तीनों आतंकवादियों को भागने का मौका दे दिया—
भागो! हम उस चर्च में छिप सकते हैं। वहां पर यह नागराज हमें कभी ढूंढ़ नहीं पाएगा।
नागराज, उनका पीछा करो। अगर वे बचकर निकल गए तो न जाने प्लूटोनियम बम से क्या तबाही मचा डालें।
आह! पर मैं तुमको छोड़कर कैसे जाऊं ध्रुव? बिजली तुम पर भी गिर सकती है।
मैं अपने बचाव का कोई न कोई रास्ता ढूंढ़ ही लूंगा नागराज! तुम फिलहाल उनके पीछे जाओ।
ठीक है ध्रुव! मैं उनसे निपटकर अभी वापस आता हूं।
लेकिन नागराज यह नहीं जानता था कि वह एक ऐसे घटनाचक्र में फंसने जा रहा है, जो उसको वापस आने नहीं देगा—
प्रक्रिया पूरी हो रही है मरिया! दूसरी दुनिया का द्वार खुल रहा है। अब किसी भी क्षण गुरु की आत्मा का संपर्क जीवों के शरीर से हो जाएगा।
नहीं, नहीं!
मुझे मत बुलाओ! मत बुलाओ मुझे!

यह... यह तो गुरू गिओटो की आवाज है। वे आना नहीं चाहते। पर क्यों ?
अभी मुझे मत बुलाओ। सिर्फ मैं ही हूं, जो इन दुष्ट आत्माओं को रोके हुए हूं।...
... ये मुझे पीछे धकेलकर खुद आगे आना चाहते हैं। रोक दो यह प्रक्रिया। रोक दो।
कुछ गड़बड़ है मारिया! यह प्रयोग रोकना पड़ेगा। मैं यह प्रक्रिया रोक देता हूं।
लेकिन इससे पहले कि वीटो प्रक्रिया को रोक पाता-
उसे खुद रुक जाना पड़ा-
रुक जाओ। कुछ मत करना! हिलना भी मत। यहां पर आखिर हो क्या रहा है ?
कुछ भी हो रहा हो। हमारा तो काम बन गया। हमको बंधक मिल गए हैं।
अब नागराज अगर यहां पर आ भी गया तो भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता!
मुझे रोको मत। मुझे यह प्रक्रिया रोकनी होगी। वर्ना दुनिया तबाह हो जाएगी।
होती है तो हो जाने दे। पर तू मत हिलना!
वर्ना दुबारा कभी नहीं हिल पाएगा। कंट्रोल पेनल से दूर हट! दूर हट!
वीटो के सामने एक गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई थी। इधर कुआं था तो उधर खाई-

और वीटो ने कुआं चुन लिया-
रोको। इस प्रक्रिया को जल्दी रोको। अब मैं ज्यादा देर तक उसको नहीं रोक सकता।
तुम लोगों को जो करना है कर लो। मैं इस प्रक्रिया को रोककर रहूंगा।
वीटो के हाथ कंट्रोल पेनल की तरफ बढ़े-
और कश्मीरा के हाथों में थमी पिस्तौल गरज उठी-
और प्रक्रिया, अनियंत्रित हो गई-
कंट्रोल पेनल के पुर्जे, हवा में उड़ने लगे-
चारों तरफ अजीबो-गरीब से साए उड़ते नजर आने लगे-
और जीवो के चेहरे के भाव पल-प्रतिपल बदलने लगे। कभी वह हंसता था तो कभी चीखता था-
और फिर एक कर्णभेदी आवाज के साथ यंत्र के टुकड़े-टुकड़े हो गए-
जीवो! तुमको क्या हो गया जीवो? आंखें खोलो!
इतनी आवाजों ने नागराज को सही स्थान तक पहुंचा दिया था-
ओह! तुम लोगों ने एक बच्चे पर हाथ उठाया?

नागराज बहुत सारे छोटे-मोटे अपराध माफ कर सकता है। लेकिन निर्दोष बच्चों पर हाथ उठाने वालों से मुझे सख्त नफरत है।
आतंकवादियों के संभल पाने से पहले ही नागराज का हमला शुरू हो गया था-
तड़ाक
और इस बार न तो नागराज भागने के लिए रास्ता छोड़ने वाला था और न ही भाग सकने का मौका देने वाला था-
लड़ाई कुछ ही सेकंडों में खत्म हो जानी थी-
अगर नागराज का एक दुश्मन बढ़ न जाता-
दूर हटो मुझसे!
जीवो! यह क्या... आऽऽह।
जीवो नहीं, मैं हिटलर हूं। हिटलर की वह अतृप्त आत्मा, जिसे दुनिया पर राज कर पाने से पहले ही नर्क के लिए रवाना होना पड़ा था।
लेकिन अब मैं वापस आ गया हूं, और इस बार मैं ऐसे वापस नहीं जाऊंगा।
और अपने मकसद को पूरा करने के लिए मुझे ऐसे ही दुष्टों की जरूरत पड़ेगी, इसीलिए मैं तुझे इनको मारने नहीं दूंगा।
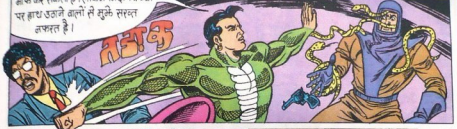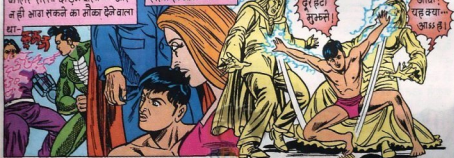
और बाहर-
चर्च से अजीब-अजीब आवाजें आ रही हैं। और नागराज अभी तक बाहर नहीं आया है। कहीं वह किसी मुसीबत में नहीं फंस गया हो...
...मुझे इस लैंड माइन से पैर हटाना ही होगा।... पर कैसे?
आहा! कब्र पर गिरा वह चाकू जिससे मसूद ने मुझ पर हमला किया था। यह मेरी मदद कर सकता है।
मेरे बूट का अगला हिस्सा 'लैंडमाइन' के बटन पर है। मैं इस चाकू से अपने जूते के अगले हिस्से को काटकर इस चाकू की बटन तक पहुंचा सकता हूं। फिर इस चाकू से बटन को दबाए रखकर...
...मैं कब्र के इस 'हेड-स्टोन' को खींचकर...
...इस चाकू पर ऐसे टिका दूंगा कि यह बटन दबा ही रहे। अब यह लैंडमाइन नहीं फटेगी, और मैं नागराज की मदद को जा सकूंगा।
नागराज को सचमुच मदद की जरूरत थी-
हा हा हा! अब मैं सिर्फ वह मानव हिटलर नहीं रहा, अब मैं एक आत्मा हूं। और मेरे पास अब वही शक्तियां हैं, जो एक आत्मा के पास ही सकती हैं।
तेरे सांप तो खुद मुझे छूते ही तड़पने लगेंगे!

यह लड़का मुझसे पहली बार मिला है। और अगर इसके ऊपर कोई आत्मा सवार है तो वह भी पहले मुझसे नहीं टकराई। लेकिन फिर भी यह मेरे बारे में जैसे सब कुछ जानता है। जरूर यह मेरे दिमाग को भी पढ़ सकता है।
हां, मैं तेरे दिमाग को पढ़ सकता हूं। और इसीलिए मैं जानता था कि अब तू मुझ पर विषफुंकार का प्रयोग करेगा, और वह भी मुझ पर असर नहीं करेगी।
अब मैं तुझे हमेशा के लिए खत्म कर दूंगा। तेरे शरीर से तेरी आत्मा को निकालकर उसे हमेशा के लिए अनंत में भटकने को छोड़ दूंगा।
नागराज तड़प उठा-
उसका सारा शरीर जैसे जड़ हो गया था। वह इस अनोखे दुश्मन का प्रतिरोध नहीं कर पा रहा था-
लेकिन इससे पहले कि उसकी आत्मा सचमुच शरीर से बाहर खिंच जाती-
आआआ हहहहह
मदद वहां पर पहुंच गई-
ओह! यहां पर क्या हो रहा है, यह तो समझ पाना मुश्किल है। लेकिन फिलहाल नागराज को बचाने के लिए...
... मुझे छिपने की जगह ढूंढनी होगी। और इससे बढ़िया छिपने की जगह फिलहाल सामने नजर नहीं आ रही है।
ओह! यह लड़का नागराज को लेकर ठीक उसी स्थान पर कूद गया है, जहां से दूसरी दुनिया का द्वार खुल रहा है। अगर मैंने वहां पर अपनी शक्तियों का प्रयोग करने की कोशिश की...

तो हो सकता है कि मैं वापस उसी दुनिया में खिंच जाऊं, जहां से मैं तिरेपन सालों के बाद निकल पाया हूं।
मुझे इनके बाहर निकलने का इन्तजार करना होगा...अरे, ये आवाजें ?
यह तो पुलिस सायरन की आवाज है। पुलिस यहां कैसे आ गई ?
मैं हांलाकि पूरी पुलिस फोर्स से निपट सकता हूं, लेकिन इस वक्त मैं उनसे टकराव नहीं चाहता।
फिलहाल मुझे यहां से जाना है। और वह भी तुम लोगों को साथ लेकर
...क्योंकि मुझे तुम्हारे जैसे कमीनो की ही जरूरत है।
भइया इसी कब्रिस्तान में आने की बात कर रहा था!
यह क्या था ? चर्च की मीनार को तोड़कर निकलता बवंडर।
चर्च में कुछ गड़बड़ है पापा ! वहीं चलकर देखना होगा।
चर्च के अन्दर जो भी गड़बड़ थी, वह शान्त हो चुकी थी। और नागराज ने जो भी देखा था, वह ध्रुव को बता चुका था-
ध्रुव ! और नागराज भी यहां पर हैं ? तुम दोनों ठीक तो हो न ? यहां पर हुआ क्या था ?
क्या हुआ था कमिश्नर साहब, यह तो मैं भी ठीक से नहीं बता सकता। अगर बता सकते हैं तो ये दोनों।
लेकिन ये तो बेहोश हैं! इंस्पेक्टर, इन लोगों के लिए एंबुलेंस मंगवाओ। पर ये लोग हैं कौन, और इस चर्च में क्या कर रहे थे ?

यह तो इनके होश में आने पर ही पता चलेगा। वैसे मैंने जो कुछ यहां पर देखा है, उस पर खुद मुझे ही यकीन नहीं हो रहा है।
खैर! मुझे यह तो बताओ कि तुम महानगर से राजनगर तक कैसे आ गए?
जवाब में नागराज कमिश्नर मेहरा को सारी कहानी सुनाता चला गया-

ओह! हमारे पास 'प्लूटोनियम रॉड्स' की चोरी की खबर अभी तक नहीं पहुंची है। यह तो हमारे देश की सुरक्षा के लिए एक बहुत बड़ा खतरा हो सकता है।
हां, पापा! हमको तुरन्त छान-बीन शुरू कर देनी चाहिए। नागराज, तुम महानगर से अपनी छान-बीन शुरू करो, और मैं राजनगर में जांच पड़ताल करता हूं।

और चंडिका तुम दोनों की जांच-पड़ताल की जांच करेगी।
वीटो और मारिया को एक पुलिस वाले की निगरानी में छोड़कर सभी वहां से रवाना हो गए-

लेकिन घटनाचक्र अभी तक पूरा नहीं घूमा था-
एक घटना बची थी-
एक कड़कती बिजली चर्च की बची हुई मीनार पर गिरी-
और टूट चुके यंत्र में ऊर्जा की एक लहर दौड़ गई-
इतनी ऊर्जा काफी थी-

उस सारे के यंत्र से बाहर निकलकर-
मारिया के शरीर में प्रवेश करने के लिए-
वीटो और मारिया की देखरेख के लिए तैनात सिपाही को इसकी खबर तक नहीं हुई-

इस नई घटी घटना से जीवो के शरीर पर कब्जा जमाए हिटलर की आत्मा भी अन्जान थी-
उस चर्च से बहुत दूर एक दुर्गम स्थान पर-
आह!
मार डाला रे!
आह! कौन है तू भई? शक्तियां तो बहुत हैं तुझमें! नागराज तक को पीट दिया तूने! पर तू है कौन और हमसे क्या चाहता है?
मैं हिटलर हूं, नादानो। एडोल्फ हिटलर। जिसने पूरी दुनिया से अकेले लोहा लिया था। लेकिन मेरे कई प्रोजेक्टों के पूरा हो पाने से पहले ही मेरे दुश्मनों ने मुझे मिलकर घेर लिया, और मुझे आत्महत्या करनी पड़ी। दुनिया को अपने जूतों के नीचे दबाकर रखने की तमन्ना अधूरी ही रह गई। इसीलिए मुझे मुक्ति नहीं मिली।...
...लेकिन अब मैं इस रूप में आकर दुनिया को तबाह करूंगा। और इस काम में तुम लोग मेरी मदद करोगे। क्योंकि तुम लोगों का भी वही मकसद है, जो मेरा है।
हम किसी के गुलाम नहीं हैं लड़के! तुझमें अजीब शक्तियां जरूर हैं लेकिन आत्मा और हिटलर का नाम लेकर तू हमें मूर्ख नहीं बना सकता। अगर साथ काम करना हो तो बोल। हम तेरे अंडर में काम नहीं करेंगे।
मूर्ख, मैं चाहूं तो तेरे दिमाग को कब्जे में ले सकता हूं। तेरे सिर को तरबूज की तरह फाड़ सकता हूं।
लेकिन उसका फायदा क्या है? मुझे मरे लोग या बिना दिमाग वाले जूम्बी नहीं चाहिए।
आहऽऽऽ

बस! बस करो। दिमाग की सारी नसें तड़क रही हैं। मेरा सर फट जाएगा!
ह... हम तुम्हारी बात मानने को तैयार हैं। अपनी शक्ति का प्रयोग हम पर मत करो।
आह! अब बताओ, तुम हमसे क्या चाहते हो?
पहले मुझे बताओ कि तुमलोगों के पास यह क्या है, और इसका तुम लोग करना क्या चाहते हो?
यह 'मिनी प्लूटोनियम बम' है। हम कश्मीर के आतंकवादी हैं। और इसका प्रयोग हम दो दिनों बाद श्री-नगर के व्यस्त चौक में करने वाले हैं।...
...क्योंकि दो दिनों बाद कश्मीर के स्थापना दिवस के समारोह पर भारत के कई बड़े नेता श्रीनगर आ रहे हैं।...
...और जब यह बम फटेगा तो कई किलोमीटर का इलाका समतल हो जाएगा, और वे बड़े नेता वहीं पहुंच जाएंगे जहां से तुम आए हो।
हम्म! प्लान तो काफी दुस्साहसी बनाया है तुमलोगों ने। लेकिन इससे कोई खास फायदा नहीं होगा। मैं दूसरी दुनिया में रहकर भी इस दुनिया पर नजर रखे हुए था। मुझे इस दुनिया में हुए एक-एक वाकए की खबर है।
कश्मीर के बारे में भी मैं जानता हूं। तुम्हारे धमाके से चार नेता मरेंगे तो चार और आ जाएंगे। और भारतीय सेना तुम लोगों के पीछे अलग से पड़ जाएगी।
इस बम का किसी और तरीके से इस्तेमाल करना होगा, ताकि ज्यादा आतंक फैले।...
...मैं तुम लोगों के साथ कश्मीर चलकर पहले वहां की स्थिति देखूंगा और फिर रास्ता बताऊंगा। फिलहाल चलकर उस बंकर का दरवाजा तोड़ना है।
क्या है उस बंकर में?
जर्मनी सेना की इमर्जेंसी सप्लाई' का डिपो। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हमने ऐसे बंकर पूरी दुनिया में बनाए थे।
मैं तुमलोगों को यहां लेकर आया ही इस बंकर के कारण था।

बंकर के अन्दर-
ये हैं हमारे गोले-बारूद के सील्ड कार्टन। लेकिन मैं यहां पर इनके लिए नहीं आया हूं।
EXPLOSIVE

मैं आया हूं इस पोशाक के लिए। जर्मन सैन्य अधिकारी की पोशाक। इसके बिना मैं खुद को अधूरा महसूस कर रहा था।
लेकिन इसको पहनने से पहले अपने साइज का बनाना होगा...

जीवी के हाथ ने पोशाक को छुआ-
और पोशाक सिकुड़ने लगी-
अब ये मेरे इस शरीर के नाप की बन जाएगी।

और फिर-
आहा! अब मैं बन गया हूं वही जर्मन तानाशाह। हिटलर।
अब चलो। मैं तुम लोगों को अपनी शक्ति से कश्मीर ले चलता हूं।

प्लूटोनियम बम अपने-आप अपनी मंजिल तक पहुंच रहा था-
और उसे खोजने की जी-तोड़ कोशिशें की जा रही थीं-
महानगर के एक पुलिस लॉक-अप में-
ये रहे वे तीन आतंकवादी, जिनको तुमने पॉवर स्टेशन में पकड़ा था नागराज!

इन पर हमने सभी तरीके आजमा कर देख लिए। थर्ड डिग्री भी। लेकिन इनकी जुबानें नहीं खुलीं।

हमारे पास ज्यादा वक्त नहीं है, इंस्पेक्टर! हमको जल्द से जल्द पता लगाना होगा कि उस बम का प्रयोग कहां पर और कैसे होगा।
मैं इनकी जुबानें खुलवाता हूं!

अब बताओ कि वह बम कहां पर गया है? कहां पर ले गया है कश्मीरा उसे? बताओ, वर्ना मेरे सांप तुम लोगों की न जिन्दा में छोड़ेंगे न मुर्दा में!
ह... हम नहीं बता सकते। हमारे संगठन के हाथ बहुत लंबे हैं। अगर हमने जुबान खोली तो वे हमको यहां पर भी नहीं छोड़ेंगे!
उनके हाथों दर्दनाक मौत मरने से तो अच्छा है कि तुम ही हमको मार डालो।
इनसे सिर फोड़ना बेकार है नागराज! हमने राजधानी से स्पेशल इंटेरोगेटर बुलवाए हैं। वे ही इनकी जुबान खुलवाएंगे!
लेकिन तब तक शायद बहुत देर हो चुकी होगी इंस्पेक्टर। कोई और रास्ता ढूंढना होगा।
इधर नागराज रास्ता ही ढूंढ रहा था—
और उधर बेहाथ, कश्मीरा और शमशीर मंजिल पर भी पहुंच चुके थे—
अच्छा! तो यह है तुम्हारा कश्मीरी अड्डा! अच्छा है काफी सुरक्षित है।
और ये हैं तुम्हारे साथी। यह लड़की कौन है? दिखने में ही बाघ जैसी है या काम भी वैसे ही करती है!
बाघ भी शर्मा जाए ऐसे काम करती है हिटलर! 'प्यूमा' कहते हैं हम इसे। दो साल पहले न जाने कहां से अपने-आप ही हमारे पास आ गई...
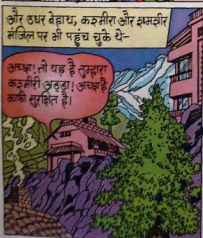
इसको हमने एक बूढ़े पहाड़ी के पास देखा था। वह मेले में इसका बाघ सा मेकअप करके इसके करतब दिखवाता था। कमाल की कलाबाज थी ये। हमको लगा कि ये हमारे काफी काम आ सकती है। हमने इसको उस बूढ़े से खरीद लिया। और तब से ये हमारे ही साथ है। ...
... ये कौन है, कहां से आई है यह इसको खुद याद नहीं है। लेकिन है बड़ी वफादार और गजब की लड़ाकू!
हम्म! तुम काफी 'इम्प्रेस्ड' हो इससे! चलो, इसके भी करतब देख...
... आहा! मिल गई। मिल गई बम लगाने की जगह। जहां पर बम लगाने में हमको कोई दिक्कत भी नहीं होगी ...
... और तबाही भी भरपूर होगी।
कौन सी है वह जगह?
वो बर्फीली पहाड़ियां। तुम प्लूटोनियम बम वहां पर फोड़ो। उससे जो भीषण गर्मी पैदा होगी वह एक नदी जितना पानी पिघला देगी। और जब वह पानी इधर की तरफ बढ़ेगा तो पूरा का पूरा शहर पानी की कब्र से ढक जाएगा!
वाह, हिटलर वाह! गजब की शैतानी बुद्धि पाई है आपने! सचमुच आप हम लोगों पर राज करने लायक हैं!
तबाही का इतना सीधा और भीषण रास्ता तो मेरी खोपड़ी में कभी आया ही नहीं। अब कल यह बम वहीं पर फटेगा।
लेकिन कल तक मैं यहां रुक नहीं सकता! मुझे कहीं और जाना है!
कहां जाना है आपको हिटलर?
अफगानिस्तान के दक्षिणी शहर गुनेवाल! वहीं पर वह चीज है, जिसकी मुझे इस वक्त सख्त जरूरत है। ...
... लेकिन वह चीज जहां पर दबी है। उसके ठीक ऊपर सैनिक मुख्यालय बना दिया गया है। उसे तोड़ना होगा और उसके लिए मुझे सरकार के खिलाफ लड़ने वाले गुरिल्ला सैनिकों की मदद की जरूरत पड़ सकती है।
हम्म! अफगानिस्तान में इस वक्त तो मेरे दोस्तों की सरकार है। लेकिन फिर भी सैनिक मुख्यालय तोड़ने की बात वे कभी नहीं मानेंगे!

इसके लिए तो सचमुच गुरिल्ला सैनिकों की मदद लेनी होगी। उनसे मैं आपको मिलवा तो सकता हूं, पर कोई फायदा नहीं होगा। उनके पास सरकारी सैनिकों से लोहा लेने के लिए पर्याप्त हथियार नहीं हैं।
उसकी तुम फिक्र मत करो। वहां एक अत्यन्त गुप्त स्थान पर जर्मनी टैंकों और विमानों का गोदाम है। वे अभी भी काम करने की हालत में होंगे। वह मैं गुरिल्ला सैनिकों को दे दूंगा!
और अभी तक पहली समस्या ही नहीं सुलझी थी। महानगर लॉकअप में बन्द आतंकवादियों ने जुबानें नहीं खोली थीं—
तूने सुना? कल खास पूछताछ वाले आ रहे हैं। अगर उन्होंने हमारी जुबानें खुलवा लीं तो!
तो फिर मौत निश्चित है। पर घबराओ मत, कश्मीरा हमको यहां से बाहर निकालने का कोई न कोई रास्ता जरूर निकालेगा।
फिर तो काम बन जाएगा। आप वहां पहुंचिए। मैं गुरिल्ला सैनिकों से मिलवाने के लिए खुद आपके साथ चलता हूं।
परिस्थितियां और जटिल होती जा रही थीं—
उस आतंकवादी की जुबान पर शायद सरस्वती विराज रही थी—
कहते ही उसकी बात सच हो गई—
कड़ाक
ऐ! कौन है तू? पुलिस स्टेशन में किसलिए घुसता चला आ रहा है?
तुझको मौत देने के लिए इंस्पेक्टर!...
... क्योंकि तूने कश्मीरा और उसके साथियों को लॉकअप में बन्द करने की जुर्रत की है।
अरे! गोलियों का कोई असर नहीं! पर कैसे?
धांय
धांय
इसीलिए कंजा खान को इतने सालों बाद फिर से हिन्दुस्तानी पुलिस से टकराने के लिए अपनी मांद से बाहर निकलना पड़ा।
धड़ाक

राज कॉमिक्स
कंजा खान के एक ही झटके से लॉक अप की सलाखें बाहर आ गईं-
चल ओए चूहो! निकलो बाहर!
क... कौन हो तुम? हमने पहले तो तुमको कभी नहीं देखा!
पहले किदर से देखेगा? कंजा खान दहशतगर्दी की दुनिया से तभी रिटायर हो गया था, जब तुम पजामे का नाड़ा बांधना सीखता था!
वो तो हमको बेहाथ भाई बोला तो हम तुमको छुड़ाने वास्ते इदर आगया!
अब निकलो बाहर!
कुछ ही पलों बाद तीनों आतंकवादी कंजा खान के साथ पुलिस स्टेशन से बाहर खड़े थे-
चलो, जल्दी गाड़ी में बैठो। कोई पुलिस वाला आ गया तो चक्कर हो जाएगा।
पर--पर जाना कहां है खान?
ओए! कश्मीरा तुमको नहीं बताया कि वो किदर मिलेगा? खान के सामने ड्रामा करेगा तो काटकर फेंक देगा!
म... मालूम है खान भाई! गुस्सा मत करो। पहले ही पुलिस वालों ने इतनी पिटाई कर रखी है। तुम तो गर्दन मत दबाओ!
तो गाड़ी में बैठकर चला! चला उसे!
जल्दी ही गाड़ी कश्मीर की तरफ जाने वाले हाइवे पर दौड़ रही थी-
जम्मू 468 km
महानगर वाला सूत्र हाथ से निकल चुका था-
और राजनगर में भी कोई प्रगति नहीं हुई थी-
ये दोनों अब तक बेहोश ही हैं ध्रुव! क्यों हैं, यह पता नहीं चल रहा है।...
44

– और इस औरत की हालत तो और भी ज्यादा आश्चर्यजनक है। इसकी नब्ज और रक्तचाप बहुत ज्यादा हाई हैं। इतने तेज रक्त चाप के बावजूद यह जिन्दा कैसे है, मुझे तो इसी बात का आश्चर्य है।
इनका जल्दी होश में आना बहुत जरूरी है, डॉक्टर साहब! इनके अलावा और कोई नहीं बता सकता कि उस चर्च में क्या हुआ था।
I.C.U.
हम कोशिश तो पूरी कर रहे हैं ध्रुव! कोई भी डेवलपमेंट होते ही हम तुमको तुरन्त खबर कर देंगे।
ओह! हिटलर ने अपनी शैतानी योजना पर काम करना शुरू कर दिया है।
अब मैं रुक नहीं सकता। क्योंकि उसको इस दुनिया में भी सिर्फ गिओटो ही रोक सकता है। और इसके लिए मुझे अपनी बेटी मारिया के शरीर का ही इस्तेमाल करना होगा।
लेकिन हिटलर ने अपने मकसद के लिए इस लोक की कुछ दुष्ट आत्माओं का सहारा लिया है। हिटलर की आत्मा से तो मैं निपट सकता हूं...
... लेकिन उन दुष्ट आत्माओं से निपटने के लिए मुझे सद्‌आत्माओं की मदद की जरूरत पड़ेगी।
और इस लड़के ध्रुव के अन्दर एक शक्तिशाली सद्‌आत्मा मौजूद है। मैं इसी की मदद लूंगा!

और सुन! मैं रात की गश्त पर जाने से पहले कुछ देर सोना चाहता हूं। मुझे डिस्टर्ब मत करना!

ओ.के. भइया!

श्वेता की टेस्ट की तैयारी पूरी हो चुकी है!

वैसे भी इन सब झगड़ों से श्वेता को नहीं, चंडिका को मतलब रहता है!

ओफ! पीछा छूटा। वर्ना अगर श्वेता कमरे में रहती तो मेरी तैयारी देखकर समझ जाती कि मैं शहर से बाहर जाने की तैयारी कर रहा हूं।

यहां पर बैठकर कुछ नहीं होगा। इतना तो स्पष्ट है कि वे कश्मीरी आतंकवादी थे।

इसलिए उस बम का प्रयोग भी कश्मीर में ही किया जाएगा। मुझे कश्मीर जाकर उन आतंकवादियों की तलाश करनी चाहिए!

मैं श्वेता या मम्मी-पापा को यह बताकर परेशान करना नहीं चाहता। प्लूटोनियम बम के कारण वे खामख्वाह चिंतित हो जाएंगे। और...

...अरे! खिड़की पर खटखट कौन?

ओह!

यह तो वही औरत है।

पर ये यहां पर कैसे आ गई?

यह तो अस्पताल में बेहोश पड़ी थी। और इस वक्त यह हवा में उड़ रही है...
...और... और अब ये शीशे में से रास्ता बनाती हुई अन्दर आ रही है। पर कैसे? और क्यों?
क्योंकि इस वक्त मुझे तुम्हारी मदद चाहिए, ध्रुव!
तुम... मेरा नाम कैसे जानती हो?
मैं तुम्हारा दिमाग पढ़ सकती हूं ध्रुव! और इस तरह से अंदर आने का कारण सिर्फ यही था कि तुम मेरी बातों को सुन कर मुझ पर आसानी से यकीन कर सको।
ओह! कौन हो तुम? और यह सब मामला क्या है?
मैं अपनी बेटी मारिया के शरीर में ओझा गिओटी की आत्मा हूं। और मुझे हिटलर की उस आत्मा को रोकने के लिए तुम्हारी जरूरत है...
...जो मेरे नाती, यानी मेरी बेटी मारिया के बेटे जीबो के शरीर में प्रवेश कर गई है। और अब वह हिटलर की आत्मा, इस दुनिया की तबाह करने की योजना पर काम कर रही है।
यह सब क्या चक्कर है, मुझे तो समझ में नहीं आ रहा। अगर शुरू से सब बताओगी तो मैं शायद कुछ समझ सकूं।
गिओटी की आत्मा मारिया के मुंह से सारी कहानी ध्रुव को सुनाती चली गई—
और दूसरी तरफ आतंकवादी कश्मीर स्थित अपने अड्डे पर पहुंच चुके थे—
कश्मीरा! हम आ गए, कश्मीरे!
अरे वाह, तुम लोग पुलिस से बच कर भाग आए? पर कैसे?
हम कहां भाग पाते? वो तो शुक्र करो बेहाथ भाई का, जिन्होंने कंजा खान को हमें छुड़ाने के लिए भेज दिया!
उन्होंने सलाखें तोड़कर हमको बाहर निकाल लिया।

रास्ते में कपड़े भी इन्होंने ही खरीदे। वर्ना हम तो कश्मीर की ठंड में ही मर जाते।
कंजा खान! कौन हो तुम भाई? पहले तो कभी देखा नहीं तुमको! और बेहाथ कमांडर ने कब तुमसे संपर्क किया, इनको छुड़ाने के लिए?
वो हमारा और बेहाथ की सीक्रेट बात है। किदर है बेहाथ? हमको अबी उसका पास लेकर चलो। अबी।
वो तो ऊपर बम लगाने... अरे! कुछ नहीं! आओ! मैं तुमको उनके पास ले चलता हूँ!
जल्दी ही–
आओ कश्मीरा! तू यहां पर कैसे आ गया? तू तो मकान की निगरानी के लिए रुका था न?
वैसे बम सही जगह पर फिट हो गया है। प्यासा और शमशीर भी काम पूरा करके बस आते ही होंगे।
पर तू मकान खाली छोड़कर क्यों आ गया? वहां निगरानी कौन करेगा?
मेरे तीनों साथी महानगर पुलिस से बचकर यहां तक आ गए हैं। वे मकान में ही हैं।
छूटकर आ गए? कैसे?
कमांडर! तुमने ही तो उनको छुड़ाने के लिए कंजा खान को भेजा था! इसको!
कंजा खान? कौन है ये? मैं इसको नहीं जानता!
अगले ही पल कश्मीरा और बेहाथ सारी बात समझ गए–
ये चाल है कश्मीरा! ये जरूर कोई पुलिस का आदमी है! हमारी टोह लेने आया है!
तड़ तड़ तड़तड़
मैं समझ गया कमांडर! पर यहां पर आकर इसने अपनी मौत को दावत दी है!
गोलियों की बारिश कंजा खान की तरफ लपकी–
उसके शरीर से भी टकराई। लेकिन कोई नुकसान नहीं पहुंचा पाई–
मुझे मारने या बचने की कोशिश करनी बेकार है कमीनो!
नागराज से बचकर कोई अपराधी आज तक भाग नहीं पाया!

तुम लोगों तक पहुंचने का यही एक रास्ता था कि मैं खुद ही भेष बदलकर तुम्हारे आदमियों को भगा दूं, और उनके जरिए तुम तक और बस तक पहुंच जाऊं। पुलिस को भी मेरे इस प्लान के बारे में पता था।
और अब तक पुलिस तुम्हारे मकान तक भी पहुंच गई होगी। भागने के सारे रास्ते बन्द हो चुके हैं बेहाथ!... खैरियत इसी में है कि अपने-आपको कानून के हवाले कर दो!
बेहाथ न कभी कानून के हाथ में आया है, और न ही आएगा। और अब तू यहां से बचकर नहीं जाएगा। क्योंकि अब बेहाथ ने अपनी गनों को जोड़ भी लिया है और उसमें गोला-बारूद भी भर लिया है।...
...तुझ पर गोलियों का असर नहीं होता। लेकिन देखता हूं कि तू 'रॉकेट अटैक' से कैसे बचता है?
कलिक
धड़ाक
वड़ाऽऽम
यह सही है बेहाथ कि अगर ये रॉकेट कहीं से भी टकराएंगे तो उस चीज को नष्ट कर देंगे।... मुझे भी। इसीलिए इनको ऐसी चीज से टकराना चाहिए, जो नष्ट होने के लायक है।
नागों की सी तेजी से नागराज की कलाई से सर्परस्सी निकलकर, नागराज की तरफ बढ़ते एक रॉकेट की तरफ लपकी—

राज कॉमिक्स
और एक झटके से रॉकेट की दिशा बदल गई-
यहां पर नष्ट होने लायक चीज मेरा शरीर नहीं, बल्कि तेरी गन है, बेहाथ!
नागराज ने रॉकेट को एकदम सही दिशा दी थी। अपनी तरफ बढ़ते रॉकेट को रोकने की चेष्टा में बेहाथ ने अपने दोनों 'हाथों' से अपने शरीर को छिपाया-
और रॉकेट ने उसकी दोनों गनों के पुर्जे-पुर्जे हवा में बिखेर दिए-
आऽऽऽह!
बेहाथ, इस झटके से जब तक उबर पाता-
नागराज ने उसे लंबी बेहोशी की दुनिया में पहुंचा दिया-
ये दोनों तो चित्त हो गए। अब ऊपर जाकर देखना होगा कि बम इन्होंने कहां पर फिट किया है?
उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी नागराज! क्योंकि अब तू सीधे ऊपर जाने वाला है! एकदम ऊपर!
प्यूमा, खत्म कर दो इसे!

प्यूमा! नाम से भी, और शक्ल से भी, दोनों तरह से ही ये खतरनाक फाइटर लगती है!

मर नागराज! मर!

मुझे इन गुंडों से भी जल्दी निपटना होगा। क्योंकि ये बम फिट कर चुके हैं। इससे पहले कि ये उसे सक्रिय कर सकें, मुझे उसे नष्ट करना होगा।

और उसके लिए मुझे सर्प सेना का सहारा लेना होगा।

नागराज ने वार तो काफी असरदार किया था–

...इनको काबू में कर लेना होगा!
नागराज ने विषफुंकार छोड़ी तो 'प्यूमा' को काबू में करने के लिए थी। लेकिन–
फूऊऊऊ
अरे!
इस स्थान की ठंडक के कारण मेरी विष फुंकार बीच में ही जम जा रही है।...
... मैं विष फुंकार का प्रयोग नहीं कर सकता।
इनको शारीरिक शक्ति से ही काबू में!...ओह! वह आदमी ऊपर से चट्टानें लुढ़का रहा है!
नागराज का ध्यान पलभर को बंटा–
तड़ाक
और वह उसी स्थान पर आ गिरा, जहां पर बर्फीली चट्टानें गिर रही थीं
हा हा हा! अब तू फंस गया है, नागराज! पिटारी में बन्द सांप की तरह। अब तेरे बदन का सारा खून इसी पहाड़ पर बहेगा।
सटाक
आह! बर्फ में दब जाने के कारण मेरे सूक्ष्म सर्प तेजी से सुषुप्तावस्था में पहुंच रहे हैं।
मेरी शक्ति क्षीण हो रही है। मैं इन चट्टानों को हटा नहीं पा रहा हूं।

उधर नागराज जिन्दगी और मौत की लड़ाई लड़ रहा था-
और इधर ध्रुव सोच रहा था कि वह जो देख और सुन रहा है, उस पर वह यकीन करे या नहीं-

लेकिन शायद मेरे इरादे की खबर हिटलर की दुरात्मा को भी हो गई थी। इसीलिए जब मैं इस लोक में जीवी के शरीर के जरिए आने वाला था, तब हिटलर की आत्मा ने मुझे धकेलकर खुद आने की कोशिश की...

... मैंने उस दुरात्मा की मंशा समझते ही वीटो और मारिया को रुकने के लिए कहा। लेकिन न जाने क्यों वे रुके नहीं। और हिटलर मुझे दूसरी दुष्टात्माओं की मदद से पीछे धकेलकर खुद इस लोक में आकर जीवी के शरीर में प्रवेश कर गया।...
... अगर बाद में बिजली चर्च पर गिरकर पल भर के लिए यंत्र में फिर से ऊर्जा का संचार न कर देती, तो मैं शायद कभी इस लोक में न आ पाता।
पर मेरे इस लोक में आने तक हिटलर की आत्मा जीवी के शरीर में घुसकर वहां से जा चुकी थी...
...मेरे सामने सिर्फ मारिया के शरीर में ही घुसने का रास्ता बचा था। क्योंकि उस रूप में मैं इस दुनिया में रह नहीं सकता था, और चूंकि मरने से पहले मेरी कोई अतृप्त इच्छा नहीं थी, और मेरे लिए इस दुनिया में आने का कोई कारण भी नहीं था, इसीलिए मैं सिर्फ उनके ही शरीर में प्रवेश कर सकता था, जो मेरा अपना खून हों।...
?
चूंकि हम दोनों एक ही आयाम से आए हैं, इसलिए मैं हिटलर की दुरात्मा की तरंगें महसूस कर सकता हूं। और मुझे आभास हो रहा है कि वह कोई बहुत खतरनाक योजना पर काम करने जा रहा है। वह पूरी दुनिया को अपना गुलाम बनाने जा रहा है।
और इस बार वह यह काम विमान, टैंक या रॉकेटों से नहीं करेगा। इस बार उसके पास शैतानी शक्ति है। मुझे उसका मुकाबला करने के लिए शक्तिशाली सद्आत्मा की जरूरत है। तुम्हारी!

जीवी इस वक्त अफगानिस्तान की दक्षिणी तरफ है। हमको वहीं चलकर उसे रोकना होगा।
अगर मैं तुम्हारी बातों को सही मान भी लूं, तो भी मैं अफगानिस्तान नहीं जा सकता। मुझे कश्मीर जाना है। प्लूटोनियम बम ढूंढने!

वहां जाने की चिन्ता तुम छोड़ दो। नागराज नाम का तुम्हारा मित्र पहले ही वहां पर पहुंच चुका है। वह स्थिति को संभाल लेगा। तुम स्वयं देख लो!

मस्तिष्क की आंखों द्वारा ध्रुव को दृश्य दिखाई देने लगा-

ओह! नागराज मुसीबत में है। काश, मैं तुरन्त उसकी मदद को वहां पहुंच सकता!

उसकी चिन्ता तुम मत करो। आखिरकार विजय नागराज की ही होगी।

कुछ गड़बड़ लगती है। मुझे चंडिका के रूप में तैयार होकर यहां आना चाहिए।

ठीक है। तुम्हारी शक्तियां देखकर मुझे भरोसा हो गया है। मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूं।

तो फिर आओ

एक धुंध ध्रुव और मारिया के शरीर को अपने आगोश में लेने लगी-

और श्वेता के चंडिका के रूप में बदल कर वापस आने तक-

दोनों के शरीर वहां से गायब हो चुके थे-

ध्रुव! ध्रुव! कहां हो तुम? यह धुंध कैसी है?

ध्रुव यहां नहीं है। जरूर वह इसी धुंध में गायब हुआ है।

बिना सोचे समझे चंडिका भी उस धुंध में कूद गई-

मेरी विषफुंकार। अगर मैं किसी तरह से विषफुंकार को बिना हवा में जमे, इनके नथुनों तक पहुंचा सकूं तो ... वाह! एक तरीका समझ में तो आ रहा है।...
... लेकिन उसके लिए मुझे सर्पों का प्रयोग दूसरी तरह से करना होगा!
अगले ही पल, नागराज की कलाइयों से निकलते सर्प एक भोंपू सा आकार धारण करने लगे-
फू
ऊ
ऊ
ऊ
आऽऽऽह!
बन गया काम! अब जब मेरी फुंकार इस भोंपू से होकर निकलेगी, तो सर्पों के शरीर की गर्मी उसे जमने से बचाए रहेगी। लेकिन इसको बेहोश होने से कोई नहीं बचा पाएगा।
अब मुझे इतना समय मिल जाएगा कि मैं अपनी शक्ति को समेटकर...
... इस बर्फीली कैद से आजाद हो सकूं।
ओह! नागराज आजाद हो गया है। प्यूना भी होश खो बैठी है। अब इसको रोक पाना असंभव है...

हां, कमीने! अब मेरा रुक पाना असंभव है, और तुम लोगों का सफल हो पाना भी। तुम लोगों को पीटने के बाद में प्लूटोनियम बम को ढूंढ कर उसे सेना के विशेषज्ञों को निष्क्रिय करने के लिए दे दूंगा!
तड़ाक
आह! तुम्हें इसका मौका नहीं मिलेगा नागराज।
वैसे तो यह बम हमको कल फोड़ना था। पर शायद श्रीनगर वासियों की किस्मत में कयामत का दिन आज ही लिखा है।
अब मैं इस रिमोट का बटन दबाऊंगा।
और प्रलय आ जाएगी–
कड़ाम
हे देव कालजयी! इसने तो बम को फोड़ दिया।
इन लोगों ने बम काफी सोच-समझकर लगाया है। बम की गर्मी से जो बर्फ पिघली है, उस पानी का रुख सीधा श्रीनगर की तरफ है। मुझे श्रीनगर को बचाना होगा। पर कैसे?
नागराज भी गिरते पानी के साथ-साथ नीचे की तरफ लपक गया–

तेज़ी से नीचे गिरता नागराज, गिरते पानी से भी नीचे पहुंच गया था। क्योंकि पानी चट्टानों पर गिरता हुआ थम-थमकर नीचे आ रहा था-
पानी को यहां आने में कुछ पलों का वक्त और लगेगा। बहते पानी को हमेशा बांध बनाकर रोका जाता है। और यह स्थान बांध बनाने के लिए बहुत उचित है।
अगले ही पल- नागराज की कलाइयों से सैकड़ों सर्प बाहर निकलकर चट्टानों से अपने शरीर को लपेटकर बांध बनाने लगे-
और जब गिरता पानी वहां पर पहुंचा तो वह 'नागबांध' तोड़कर आगे नहीं बढ़ पाया-
इस ठंडे पानी से तुम लोगों को कुछ तकलीफ तो जरूर होगी मित्रो! लेकिन जब तक मैं कोई और रास्ता नहीं सोच लूं तब तक तुम लोगों को इस पानी को यहीं रोके रखना है।
पानी ठंडा नहीं है, बल्कि विस्फोट के कारण गर्म हो गया है नागराज! हमको ज्यादा समस्या इस पानी में मौजूद हल्की रेडियोधर्मिता से हो रही है। पर चिन्ता मत करो। हम तुम्हारे आदेश का पालन करेंगे।
लेकिन इससे पहले कि नागराज कोई और उपाय सोच पाता-
वह चीख उठा। ठंडे लोहे की धार उसकी पीठ को काट गई थी-

धड़ाक
अरे! यह क्या हो रहा है! मेरे शरीर पर लगा घाव भर नहीं रहा है। और मुझे कमज़ोरी भी लग रही है।...
...समझ गया। मेरे शरीर में के अधिकतर सर्प बांध बनाने के लिए बाहर निकल गए हैं। इसीलिए जो घाव वे तुरन्त भर देते थे, अब भर नहीं पा रहे हैं।...
...और नागों की कमी के कारण मुझे कमज़ोरी भी लग रही है।
ऐसे में अगर मुझे चाकू के कुछ वार और लग गए तो ज्यादा खून बह जाने के कारण मेरी मौत भी हो सकती है।...
नागराज एक मुसीबत से निकलकर दूसरी मुसीबत में फंस रहा था। और ध्रुव गिओटो की आत्मा के साथ पहली मुसीबत के सामने पहुंच चुका था-
धड़ाम
धड़ाक
ये आवाजें कैसी?
ओह! तुमको प्रकट होने के लिए इससे अच्छी जगह नहीं मिली थी गिओटो?
तुमने तो हमें एक भीषण युद्ध के ठीक बीचो-बीच में उतार दिया!

हमको इसी सैन्य मुख्यालय पर आना था ध्रुव! क्योंकि जिस चीज के जरिए हिटलर मानव जाति को गुलाम बनाना चाहता है, वह इसी इमारत के नीचे है। इमारत लगभग नष्ट हो चुकी है।
और मुझे आभास हो रहा है कि जीवी के शरीर में हिटलर की आत्मा, वहीं पर गई है।
द्वितीय विश्व युद्ध के ये टैंक और उन पर बना 'नाजी स्वस्तिक' का निशान देखकर तुम्हारी बात पर यकीन करना ही पड़ेगा।
लेकिन अब हम क्या करें? वह 'हिटलर' तो कहीं नजर नहीं आ रहा है!
वह इमारत के अंदर है। मैं इमारत में जा रहा हूं। क्योंकि जीवी...हिटलर को तुरन्त रोकना होगा!
तुम इन टैंकों का ध्यान अपनी तरफ खींचो, ताकि इनके हमले से मारिया के शरीर को कोई नुकसान न पहुंचे।
ओह! 'हिटलर' ने भी शायद बेहाथ के साथी आतंकवादियों की मदद इसीलिए ली है, ताकि उसके इस इमारत में घुसने से पहले अधिकतर सैनिक मारे जाएं। और वे 'जीवी' के शरीर को नुकसान नहीं पहुंचा पाएं।
लेकिन ये हिटलर भी कमाल का आदमी था। न जाने कहां-कहां इसने अपने शस्त्रास्त्रों को छुपाकर रखा था!
ध्रुव की हरकत ने टैंक के अंदर बैठे गुरिल्ला सैनिकों का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया था—
कोई भाग रहा है कमांडर! देखने से सैनिक तो नहीं लगता, पर है हट्टा-कट्टा!
यहां पर सैनिकों के अलावा और कौन होगा! जरूर यह मदद लेने जा रहा है। टैंकों को इसके पीछे ले चलो। इमारत को नष्ट करने का काम तो पूरा हो ही चुका है।
ध्रुव टैंकों का ध्यान अपनी तरफ खींचने में सफल हो गया था—
और थोड़ी ही देर में, वह टैंकों को इमारत से थोड़ी दूरी पर खींच लाया था—

★ ... आप कैसे बढ़ने लगते हैं ? यह जानने के लिए पढ़ें —स्नेक पार्क

*...नगर की तबाही और कमांडर नताशा

'प्यूमा' यानी रिचा की मदद, और अपने शरीर में फिर से होती शक्ति के संचार के कारण, नागराज को दोनों आतंकवादियों को चित्त करने में वक्त नहीं लगा-

तड़ाक

धम्मम

मेरे शरीर के घाव भर रहे हैं। यानी मेरे शरीर के सर्प फिर से अपनी सामान्य मात्रा में आ रहे हैं।...

...लेकिन मुझे यह समझ में नहीं आया प्यूमा कि तुमने अपने ही साथियों को मारकर मेरी मदद क्यों की?
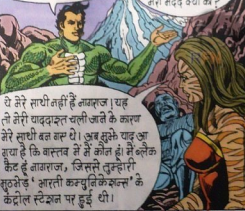
ये मेरे साथी नहीं हैं नागराज। यह तो मेरी याददाश्त चली जाने के कारण मेरे साथी बन गए थे। अब मुझे याद आ गया है कि वास्तव में मैं कौन हूं। मैं ब्लैक कैट हूं नागराज, जिससे तुम्हारी मुठभेड़ 'भारती कम्युनिकेशन्स' के कंट्रोल स्टेशन पर हुई थी।

तुम्हारी विष फुंकार के कारण मेरी याददाश्त चली गई थी, और जब मैं पहाड़ों में भटक रही थी तो एक बूढ़े पहाड़ी ने मुझे सहारा दिया। वह मेरी कलाबाजी के करिश्मे दिखाकर रोजी-रोटी कमाता था। लेकिन वह लालची निकला। उसने मुझे आतंकवादियों के हाथ बेच दिया। लेकिन जब तुमने इस बार फिर मुझ पर फुंकार का प्रयोग किया तो मेरी याददाश्त वापस आ गई।

दरअसल मुझे 'स्नायुतंत्र' की एक लाइलाज बीमारी थी। दो साल पहले डॉक्टरों ने मेरी बची उम्र सिर्फ छः महीने बताई थी। लेकिन मैं अब तक जिन्दा हूं। और मुझे पूरा विश्वास है कि यह सिर्फ तुम्हारी विषफुंकार का कमाल है। उसने मेरे स्नायुतंत्र की खराबी को दूर कर दिया।
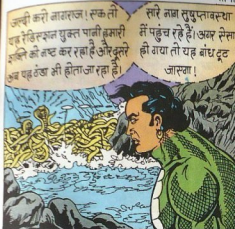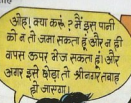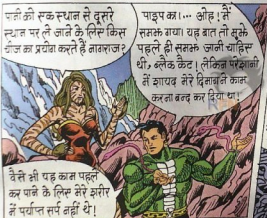
पानी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए किस चीज का प्रयोग करते हैं नागराज?

पाइप का।... ओह! मैं समझ गया। यह बात तो मुझे पहले ही समझ जानी चाहिए थी, ब्लैक कैट! लेकिन परेशानी में शायद मेरे दिमाग ने काम करना बन्द कर दिया था!

वैसे भी यह काम पहले कर पाने के लिए मेरे शरीर में पर्याप्त सर्प नहीं थे!
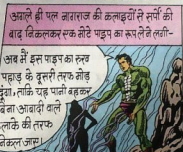
अगले ही पल नागराज की कलाइयों से सर्पों की बाढ़ निकलकर एक मोटे पाइप का रूप लेने लगी-

अब मैं इस पाइप का रुख पहाड़ के दूसरी तरफ मोड़ दूंगा, ताकि यह पानी बहकर बिना आबादी वाले इलाके की तरफ निकल जाए।

नागराज की कोशिशें सफल हुईं। नाग पाइप के जरिए, पानी बहता हुआ दूसरी तरफ निकल गया-

अपना काम करके सभी सर्प फिर से नागराज के शरीर में समा गए-

अब सिर्फ एक ही काम बच गया है। पुलिस को जाकर इंफार्म कर देना है ताकि वह इन आतंकवादियों को आकर समेट ले।
नहीं नागराज! यह काम तो मामूली सा था। असली काम तो उस लड़के को रोकना है जो बेहाथ और कश्मीरा को लेकर यहां आया था।
मुझे आभास हुआ था कि उस लड़के के अन्दर कुछ अद्भुत शक्तियां थीं। और इन शक्तियों का प्रयोग दुनिया को नुकसान पहुंचाने के लिए कर रहा था।
सारी बात-चीत मेरे सामने ही हो रही थी। मुझे पता है कि वह यहां से कहां गया है। मेरे ख्याल में हमको वहां जाकर जांच करनी चाहिए।
तुम ठीक कह रही हो। उस लड़के की शक्तियां तो मैंने भी देखी थीं। लेकिन प्लूटोनियम बम के चक्कर में मैं उसे भूल ही गया था।
हमको उस लड़के के इरादों का पता तो करना ही होगा। मैं एक हैलीकॉप्टर का इंतजाम करता हूं।
नागराज की मुसीबतें खत्म हो गई थीं।
आओ मेरे साथ!
लेकिन ध्रुव के लिए मुसीबतें अभी खत्म नहीं हुई थीं-
धड़ाम
तड़ाक
इन टैंकों से निपटने का कोई न कोई रास्ता जल्दी ही निकालना होगा...
... वर्ना जल्दी ही कोई न कोई गोला मेरे चिथड़े... आह!
सिर पर लगी पत्थर के टुकड़े ने ध्रुव के होश उड़ा दिए थे। उसको आभास नहीं था कि टैंक की नाल उसकी तरफ तन चुकी है-

ध्रुव के चिथड़े उड़ा देने के लिए गोला दगा-
बड़ाम
लेकिन ध्रुव के शरीर तक नहीं पहुंच पाया-
भड़ाक
आह! चंडिका, तुम यहां कैसे आ गई?
वैसे ही जैसे तुम आ गए? अब ये आने-जाने का ध्यान छोड़ो और इन टैंकों से निपटने का उपाय सोचो!
ठीक है। मैं तुमसे बाद में बात करूंगा।
तीन टैंक हैं। एक से तुम निपटो, दूसरे को मैं देखता हूं, और तीसरे से बाद में मिलकर निपट लेंगे।
चंडिका एक टैंक की तरफ लपक गई। और ध्रुव ने अपना ध्यान दूसरे टैंक की तरफ मोड़ दिया-
बड़ाम
वह लड़का हमारी तरफ बढ़ रहा है। अब हम क्या करें?
चिथड़े उड़ा दो इसके! और अगर फिर भी बच जाए तो कुचल डालो इसको!
लेकिन न तो गोले ही ध्रुव के चिथड़े उड़ा पाए और न ही पहिए उसको कुचल पाए-
जो चाहता था वह तो मैंने कर दिया। मैं टैंक के बगल में आ गया हूं। और अब इसको नष्ट करने का उपाय करता हूं।
ये टैंक का 'फ्यूल टैंक' है। और इसमें भेद करने का काम मेरा 'एसिड कैप्सूल' कर देगा।
मैं टैंक के इतनी पास हूं कि मुझे खत्म करने के लिए टैंक वालों को टैंक से बाहर निकलना ही पड़ेगा।... निकल आया!
अब तू जिन्दा नहीं बचेगा लड़के!
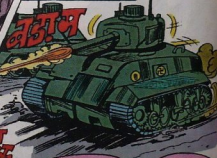
गोलियों से बचने के लिए टैंक से उछलकर दूर जाते-जाते भी ध्रुव ने 'फ्यूल टैंक' में हुआ वह छेद देख लिया था, जिससे टपककर पेट्रोल की एक धार दूर बहती जा रही थी–
और गोली चलाओ! क्योंकि बगैर तुम्हारे गोली चलाए तो मेरा प्लान पूरा हो भी नहीं सकता!
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़
तड़ तड़ तड़
अब मैं टैंक से काफी दूर आ चुका हूं। अब मुझे लपककर पेट्रोल की यह धार पार करनी है। क्योंकि मुझे मारने के लिए चलती अंधा-धुंध गोलियों में से एक न एक तो इस धार पर लगेगी ही...
शम्शुल! बाहर कूद!
... और गोली से पेट्रोल में लगी आग इस धार से होती हुई फ्यूल टैंक तक पहुंच जाएगी।
तड़ तड़ तड़
फ्यूल टैंक में लगी आग से, टैंक एक धमाके के साथ फट पड़ा–
ध्रुव का प्लान सफल हो गया था–
बड़ाम
और अब बारी चंडिका की थी–
यह तो कोई लड़की है। यह कहां से आ गई?
टैंक के आगे तनकर खड़ी है। लगता है इसको जान की परवाह नहीं है...

तो फिर इसकी जान हम ले लेते हैं। लेकिन इस पर तोप का एक गोला क्यों बरबाद करें? इसको जहन्नुम पहुंचाने के लिए तो एक गोली ही काफी है।
तो चल! बाहर निकलते हैं टैंक से!
आहा! मैं सोच ही रही थी कि तुम लोग गोला दागोगे या गोली! अच्छा हुआ कि तुम लोगों ने खुद ही यह सस्पेंस खत्म कर दिया!
सस्पेंस खत्म हो गया तो अब तू भी खत्म हो जा! बता तुझे तड़पा-तड़पाकर मारें या एक झटके में खत्म कर दें?
वह तुम लोग खुद ही तय कर लेना। क्योंकि मैं कुछ बताऊंगी तो भी तुम लोग सुन नहीं पाओगे।
अभी अगर तुम कुछ सुन पाओगे तो सिर्फ मेरी अल्ट्रासोनिक व्हिसल!
चंडिका ने अपनी बेल्ट के बक्कल के अन्दर लगा, अल्ट्रासोनिक सर्किट ऑन कर दिया-
और दोनों गुरिल्ला सैनिक बन्दूकें छोड़कर चिल्ला उठे। उनके कानों को तो कुछ सुनाई नहीं दे रहा था, लेकिन उनके मस्तिष्क को घातक तरंगें जोरदार तरीके से महसूस हो रही थीं-
पर उनकी यह दयनीय हालत ज्यादा देर तक नहीं रही-
क्योंकि चंडिका ने उनके मस्तिष्क को अंधेरे में डुबा दिया था-
कोई मदद चाहिए चंडिका?
धाड़
तड़ाक
नहीं ध्रुव! तुम फटाफट टैंक में बैठो। मैं भी अभी आती हूं!...
... अब तीसरे टैंक से यह दूसरा टैंक ही निपटेगा!

तीसरे टैंक के अंदर बैठे विद्रोहियों की नजरें इसी लड़ाई पर गड़ी हुई थीं-
वे दोनों हमारे साथियों को बेहोश करने के बाद टैंक में घुस रहे हैं।
इनके इरादे आखिर क्या हैं?
ध्रुव और चंडिका के इरादे जल्दी ही स्पष्ट हो जाने वाले थे-
तुम यह टैंक चला सकते हो या नहीं, ध्रुव?
मुझे टैंक चलाना तो आता है, पर यह टैंक मैंने कभी नहीं चलाया। लेकिन अगर यह गधे टैंक चला सकते हैं तो मैं भी चला सकता हूं।
ध्रुव ने जल्दी ही निरीक्षण करके टैंक के कंट्रोल को समझ लिया-
समझ गया! अब मैं एक ही निशाने में इस तीसरे टैंक को बेकार कर दूंगा...
नहीं ध्रुव! यह गलती मत करना। ये टैंक जहां से आए हैं वहां और भी हथियार हो सकते हैं। हमारा मुख्य इरादा इनके अड्डे का पता लगाना होना चाहिए।
तुम ठीक कह रही हो! मैं इनको वापस करके इनके बिल की तरफ खदेड़ने की कोशिश करता हूं।
वही हुआ जैसा कि ध्रुव ने सोचा था-
टैंक को भगा करीबे। दो टैंक वाले तो पिट गए लेकिन इसको नहीं पिटना है!
विद्रोहियों का टैंक बचने के लिए अपने अड्डे की तरफ भागा और ध्रुव का टैंक उनके पीछे!
उधर ध्रुव विद्रोहियों से निपट रहा था और इधर मारिया के शरीर में स्थित गिओटी, जीवो के शरीर पर कब्जा जमाए हिटलर के सामने पहुंच चुका था-
आओ, गिओटी आओ! तुम्हारे आने के संकेत मुझे मिल रहे थे।...
VIRUS B
इससे मिलो! यह है मेरा वफादार वैज्ञानिक शिंडलर!...

-- इसकी आत्मा से मेरी मुलाकात हुई थी। उसी से मुझे पता चला कि इसने अपना प्रयोग पूरा तो कर लिया था लेकिन तब तक मैं आत्म-हत्या कर चुका था। अपनी जिन्दगी का मकसद व्यर्थ जानकर इसने इस अंडरग्राउंड लैब के अंदर बम लगा दिया। और यह लैब विस्फोट में नीचे दब गई। यह लैब इसकी कब्र बन गई। लेकिन इसका आविष्कार नहीं मरा!
जानना चाहते हो, इसका आविष्कार क्या था?
ये! वायरस टैली। इस वायरस के दो भाग हैं। 'मदर वायरस' और 'चिल्ड्रेन वायरस'! इस छोटे सिलेंडर में है 'मदर वायरस' और इस बड़े सिलेंडर में 'चिल्ड्रेन वायरस' भरा हुआ है!
देखो, यह 'मदर वायरस' मैंने पी लिया!
CHILDREN VIRUS B
और अब बाकी दुनिया को पिलाऊंगा मैं, 'चिल्ड्रेन वायरस'! ये दोनों वायरस मस्तिष्क में जाकर बैठ जाते हैं। ये मदर वायरस अब मेरे यानी जीवी के दिमाग में फिट हो गए हैं...
...और अब इस 'चिल्ड्रेन वायरस' को मैं पृथ्वी के वातावरण में फैलाऊंगा तो यह हर जीवित प्राणी के सांसों से होता हुआ उन सबके दिमाग में प्रविष्ट हो जाएगा। इन दोनों वायरसों का आपस में विचार तरंगों द्वारा मेल रहेगा। और 'मदर वायरस' सारे 'चिल्ड्रेन वायरसों' का कंट्रोल करेगा यानी मैं सारे पृथ्वी वासियों को कंट्रोल करूंगा!
तेरा यह सपना मैं कभी पूरा होने नहीं दूंगा दुष्ट तानाशाह!...
...क्योंकि मैं यहां पर तेरे मंसूबों पर पानी फेरने के लिए ही आया हूं।

तू भूल गया गिओटी कि अगर तेरे अंदर आत्मिक शक्तियां हैं तो मेरे अंदर भी शैतानी शक्तियां हैं।
जो तुझसे निपटने के लिए काफी हैं।
अच्छा हुआ कि तू अपने-आप ही मेरे सामने आ गया। वर्ना तुझे ढूंढने में मुझे अपना समय बरबाद करना पड़ता!
भूमिगत प्रयोगशाला एक अंधा कर देने वाली चमक से भरने लगी-
अब तू यहां से बचकर नहीं जाएगा।
मारिया के शरीर में घुसी गिओटी की आत्मा, हिटलर का मुकाबला करती रही थी-
लेकिन शैतानी शक्तियां, गिओटी पर धीरे-धीरे भारी पड़ रही थीं-
आऽऽह

तानाशाह
अब मैं तेरी बेटी मारिया के दिमाग को सुन्न कर दूंगा! और फिर इस बेकार शरीर के जरिए तू कुछ नहीं कर पाएगा।
तू भूल रहा है, दुष्ट! मैं एक ओझा भी हूं। और मुझे इंसान के शरीर से भूतों को निकालना आता है।
गिओटी मारिया की उंगली को तेजी से हवा में नचाने लगा—
और उस उंगली से निकलता धुआं हवा में जमकर—
एक तांत्रिक आकृति की रचना करके जीवी के शरीर को अपने घेरे में लेने लगा—
य... यह क्या हो रहा है? मेरा दम घुट रहा है। रोक... रोक दे गिओटी इसको! मैं तड़प रहा हूं!
और तेरे आत्मिक रूप में बाहर निकलते ही मैं तुझको वहीं भेज दूंगा, जहां से निकलकर तू इस लोक में आया है।
जीवी के गले से निकलती भारी आवाज की चीत्कारों से लैब गूंजने लगी—
और फिर जीवी पस्त होकर बैठ गया—
यह क्या हुआ? लगता है हिटलर की आत्मा शक्तिहीन हो रही है।
तड़प! और तड़प, दुष्ट! अब तुझको जीवी के शरीर से बाहर आना ही पड़ेगा।...

गिओटी का ख्याल शायद सही था। क्योंकि अगले ही पल जीवो के गले से निकलती आवाज पतली हो गई थी-
मां। यह... क्या हो रहा है? मुझे दर्द क्यों हो रहा है?
यह तो जीवो की आवाज है। यानी मैं हिटलर की आत्मा को बाहर तो नहीं निकाल पाया, पर मैंने उसे शक्तिहीन कर दिया है।
मैं... मैं तुमको अभी इस फंदे से बाहर निकालता हूं बेटे!
तुम्हारी आवाज मोटी क्यों हो गई है मां! और मेरे बदन पर ये कपड़े कैसे आ गए?
अभी बताता... बताती हूं बेटा! आजा मेरे पास!
अभी आता हूं मम्मी!
अरे! यह तो हिटलर की आवाज...
आता हूं!
हां, यह मेरी ही आवाज है मूर्ख! मैं सिर्फ शक्तिहीन होने का नाटक कर रहा था। और तूने मेरे छलावे में फंसकर अपने तांत्रिक बंधनों को हटा लिया।...
असावधान गिओटी, मारिया के शरीर के जरिए एक भीषण वार खाकर अपने होश खो बैठा—
त
ड़
क

होश खो बैठा गिओटी! मैं तुझे मार तो नहीं सकता, और जब तक तू इस औरत के शरीर में है तब तक इसको भी मार नहीं सकता।
लेकिन मेरा यह वार खाकर तू काफी देर तक शक्तिहीन रहेगा। और तब तक मैं अपनी शक्ति को इतना बढ़ा लूंगा कि तू तो क्या परमात्मा भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा।
अब मेरा सबसे पहला काम इस 'चिल्ड्रेन वायरस' को धरती के वातावरण में फैलाना है।
अगले ही पल, पृथ्वी की सतह को तोड़ता हुआ, जीवो का शरीर जब बाहर आया तो उसके हाथ में 'चिल्ड्रेन वायरस' से भरा वह सिलेंडर भी था-
VIRUS B
हिटलर की कुटिल योजना अपने अन्तिम चरण में पहुंच चुकी थी-
और ध्रुव अभी इस कहर की जानकारी से भी अंजान था-
जिसकी किस्मत में एक पल बाद 'फट' जाना लिखा हुआ था-
फटाक
जल्दी ही यह वायरस पूरी पृथ्वी के वातावरण में फैल जाएगा!
और थोड़ी देर में इस वायरस का असर मानवों पर होना शुरू हो जाएगा।...
...और तैयार होने लगेंगे बिना शर्त मेरा तलवा चाटने वाले गुलाम।
हम बागियों के पीछे चल तो रहे हैं चंडिका, लेकिन एक टैंक के बूते पर उनसे निपट पाना मुश्किल होगा।...
...शायद अब तक उनको आगे वाले टैंक द्वारा खबर हो भी चुकी होगी कि हम टैंक पर चढ़कर आ रहे हैं!
नहीं, ध्रुव! उसका एंटीना टूट गया है। वह इतनी दूर 'संचार-तरंगें' नहीं भेज सकता। पर!...
यह रहा रेडियो ट्रांसमीटर, और यह रही इन विद्रोहियों के अड्डे की फ्रीक्वेंसी!
आहा! मिल गया रास्ता। वह मैसेज नहीं भेज सकता, पर हम तो भेज सकते हैं।

अगले ही पल- विद्रोहियों के हैडक्वार्टर में ट्रांसमीटर खटखटाने लगा-
हैलो, हैडक्वार्टर! एक टैंक पर... सैनिक कब्जा... खर्रर्रर... होकर... हैडक्वार्टर आता... खर्रर्र... है... खट!
किसका मैसेज है नवाज?
शायद टैंक से आ रहा था! बहुत डिस्टर्बेंस थी। पर इतना पता लग गया है कि सैनिकों ने टैंक पर कब्जा कर लिया है और वे उसी पर चढ़कर इधर आ रहे हैं।
लेकिन अब वे सफल नहीं होंगे। क्योंकि हमारे जांबाज साथियों ने हमको पहले ही मैसेज भेज दिया है। अब हम उनको आते ही उड़ा देंगे!
एक मैसेज तो गया। अब टैंक वालों की बारी है। इनको भी टूटी फूटी अफगानी में उल्टा मैसेज सुना दो।
हा हा हा! वाह, चंडिका, मान गए तुमको! तुम दुश्मन को आपस में ही लड़ाने की योजना बना रही हो!
और फिर आगे भागते टैंक का भी ट्रांसमीटर हरकत में आ गया-
हैलो!... वफादार साथियों! हैडक्वार्टर... पर... खर्रर्रर... सैनिकों का कब्जा... खर्रर्र... कट!
या अल्लाह! हैडक्वार्टर पर सैनिकों का कब्जा हो गया है!
और हम हैडक्वार्टर के इतनी पास आ गए हैं कि वापस भाग नहीं सकते। अब मुकाबला करना ही पड़ेगा।
आ गए कुत्ते! दागो गोला!

अगले ही पल, दो टैंकों से गोले निकलकर, करीम के टैंक की तरफ लपके-
और उस टैंक का पुर्जा-पुर्जा हिल गया-
कड़ड़ड़ड़ाम
धड़ाम
लेकिन अन्दर घातक रूप से घायल हो चुके गुरिल्ला सैनिकों को बिना बदला लिए मरना गवारा नहीं था-
आह! अब हम... नहीं बचेंगे। लेकिन... लेकिन... हम इनको भी जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।
यह टैंक बेकार जरूर हो गया है!... पर... मैं अब भी... आह! गोला... दाग... सकता है।
धड़ाम
वे हम पर अब भी गोला दाग रहे हैं। मूर्ख कहीं के! टूटे टैंक से क्या खाक सही निशाना लगेगा।
टूटे टैंक से सही निशाना लगना मुश्किल तो था। लेकिन निशाना वे टैंक थे भी नहीं-
सांय
अरे... अरे! यह गोला तो हमारे ऊपर से होता हुआ गुफा के अन्दर जा रहा है।
गुफा के अन्दर तो गोले-बारूद का एक बड़ा भंडार मौजूद है।
अगर यह गोला अन्दर जाकर फट गया...
"तो सब नष्ट हो जाएगा-"
धमम
एक भयंकर धमाके के साथ गुफा चट्टानों में बिखर गई-

ध्रुव और चंडिका के वहां पहुंचने तक सब खत्म हो चुका था-
ओह! यहां तो कुछ ज्यादा ही तबाही मच गई। अगर मैं जानता कि इन आतंकवादियों का यह हाल होना है तो मैं कोई और योजना बनाता!
तुमने किसी की जान नहीं ली है ध्रुव!
वैसे भी यह शहर का अपराध नहीं युद्ध है।
और इस युद्ध के आखिरी शहीद तुम दोनों होने वाले हो!
ओह! कुछ गुरिल्ला सैनिक बच गए हैं। और इतनी दूरी से इनका निशाना चूक पाना मुश्किल है। चाहे हम कितनी कलाबाजियां ही क्यों न खा लें!
ट्रिगर पर उंगली दबने लगी। और ध्रुव टैंक की आड़ लेने को तैयार हो गया-
लेकिन दोनों में से कुछ भी नहीं हुआ-
सां...सांप!
सांप कहां से आ गए?
'सांप' का तो एक ही मतलब होता है! नागराज!
तुम यहां पर कैसे आ गए नागराज? और यह कौन है? इससे तो तुम हिमालय पर लड़ रहे थे?
यह तुम्हारी पुरानी दोस्त ब्लैक कैट है ध्रुव! लेकिन तुमको कैसे पता चला कि मैं हिमालय पर था, और इससे लड़ रहा था?
जवाब में ध्रुव नागराज को सारी कहानी सुनाता चला गया-

★ राज, दरअसल नागराज का ही दूसरा गुप्त रूप है।

नागराज और ध्रुव के दलदल में डूबते शरीर—

और उसको रोक सकने वाला एकमात्र शख्स अभी होश में ही आ रहा था —

ओह! हिटलर के वार ने मुझे एकदम शक्तिहीन कर दिया था। लेकिन हिटलर गया कहां? मुझे अपनी शक्ति से उसका पता लगाना चाहिए।

वह अपने पीछे आत्मिक कणों की एक लहर छोड़ता गया है, जो इस छेद से निकलकर...
... यहां तक आ रही है। और यहां से... अरे!...
... यहां तो भीषण तबाही मची हुई है। और यह दलदल यहां कहां से आ गया
जरूर यह 'हिटलर' का ही किया हुआ है। क्योंकि उसकी तरंगें यहां तक भी आ रही हैं। पर दलदल क्यों? जरूर इसमें किसी को डुबोया गया है। पर किसको?
और तभी जैसे गिओटो के सवाल के जवाब में नागरस्सी दलदल की सतह को भेदती हुई बाहर निकली-
और उसके साथ ही साथ दो और आकृतियां कीचड़ में लथपथ बाहर निकलीं-
ध्रुव! और नागराज भी! यह यहां पर कैसे... खैर छोड़ो। तुम लोग दलदल में डूबकर भी कैसे बच गए?
इन सरकंडों की और ध्रुव के दिमाग की मेहरबानी से। हमने दलदल में डूबते ही इन सरकंडों को मुंह में पकड़ लिया था। और इनकी नलियों से ही हम लोग सांस लेते रहे! हिटलर अपने दलदल बनाने के चक्कर में हमको खुद ही बचने का रास्ता बता गया था!

हम लोग तो 'हिटलर' के चंगुल से बच गए, लेकिन यह दुनिया उसके शिकंजे से नहीं बच पाएगी।
क्योंकि उसने 'वायरस टेली' को हासिल करके उसके 'मदर' हिस्से को पी लिया है और उसके 'चिल्ड्रेन' हिस्से को वातावरण में फैला दिया है।
इस 'वायरस टेली' का जिक्र वह 'हिटलर' भी कर रहा था!
यह 'वायरस टेली' आखिरकार है क्या?
गिओटी, ध्रुव और नागराज को सब बताता चला गया—
ओह! यानी चंडिका और ब्लैक कैट उसी वायरस के असर के कारण हिटलर के साथ चली गई हैं। लेकिन हम पर उस वायरस का असर क्यों नहीं हो रहा है?
क्योंकि वायरस का असर इस इलाके में जो होना था, वह हो चुका होगा। अब यहां के वातावरण में वायरस नहीं होंगे!
इस बात की सच्चाई को तो पास के शहर जाकर तुरन्त परखा जा सकता है।
ठीक है। वहां पर हम अपनी साफ-सफाई भी कर सकते हैं!
लेकिन पास के शहर पहुंचते ही ध्रुव और नागराज सही में स्तब्ध हो गए—
क्योंकि अपने शरीरों को साफ करने के बाद जब उन्होंने छानबीन शुरू की तो पाया कि—
पूरा शहर एकदम खाली पड़ा है। न सड़क पर कोई जानवर तक नजर आ रहा है, और न ही आसमान में उड़ता कोई पक्षी!
लोग बदहवासी में भागे हैं, जो चीज जहां पर है वैसी ही पड़ी हुई है। आखिर यहां पर हुआ क्या है?
इधर देखो! टेलीविजन चल रहा है। और उस पर 'सी.एन.एन.' का स्पेशल न्यूज बुलेटिन आ रहा है।

अब तक हमारे पास सारे महाद्वीपों से समाचार आ चुके हैं। पूरी पृथ्वी की आबादी इस आश्चर्यजनक रोग से पीड़ित होती जा रही है। हमारे कैमरामैन स्पेशल प्रोटेक्टिव सूट पहनकर इस रिपोर्ट को आप तक पहुंचा रहे हैं।
इस आश्चर्यजनक रोग से एकाएक रोगी संज्ञा शून्य हो जाता है। ऐसा लगता है जैसे उसका दिमाग एकदम खाली हो गया है।
हे देव कालजयी! तुम्हारा कहना एकदम सही था गिओटी!
यह तो मानव जाति अपनी तबाही की ओर जा रही है।
मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। कभी नहीं होने दूंगा। मेरी गलती की वजह से ही हिटलर इस लोक में आया है, और अब मैं ही उसे...
...मुझे उसके संकेत मिल रहे हैं। लेकिन इस बार संकेत बहुत अधिक शक्तिशाली हैं! उस नीच ने अपनी ताकत लाखों गुना बढ़ा ली है। पर कैसे?
संकेत उधर से आ रहे हैं। वह दुष्ट वहीं है!
तो चलो। वहीं चलकर उसे देखते हैं।
मानवता के इस भक्षक को नष्ट करने में हम तुम्हारी मदद करेंगे।
तीनों उस मोड़ की तरफ भागे जिसके पार—
एक ऐसा आश्चर्य उनका इंतजार कर रहा था जिसे न तो कभी किसी ने देखा था, और न ही सपने में भी उसका ख्याल किया था—
म... मैं जो कुछ देख रहा हूं वह सच है क्या?

हां, गिओटी ! तू जो कुछ देख रहा है वह सच है। अपने असली रूप में तो मैं केवल इन मानवों के मस्तिष्क को ही नियंत्रित कर सकता था, लेकिन अब अपनी शैतानी शक्तियों की मदद से मैं अपना यह रूप बना सकता हूं। अब इनके मस्तिष्क मेरे इतने करीब आ गए हैं कि मैं इन सबकी मानसिक तरंगों का एक साथ प्रयोग कर सकता हूं।
अब अगर मैं चाहूं तो यहां बैठे-बैठे आसमान में घूम रहे सितारों के भी टुकड़े-टुकड़े कर सकता हूं फिर तेरी शक्तियां मेरे सामने मच्छर के डंक से ज्यादा कुछ नहीं हैं।
एक मच्छर का डंक भी किसी को मलेरिया करके उसकी जान ले सकता है हिटलर! तू लाख कोशिशें कर ले पर तू अपने इरादों में कामयाब नहीं हो पाएगा!
गिओटी का वार सीधा अपने निशाने पर लगा-
हा हा हा ! और अपनी शक्तियां मुझे दे गिओटी! अब मेरे पास इतनी आत्माएं हैं कि सारे ब्रह्मांड की शैतानी शक्तियों को सोख सकता हूं...
...और उनका पलटकर इस्तेमाल भी कर सकता हूं। ऐसे!

आह!
तुम ठीक तो हो न गिओटो?
हिटलर बहुत शक्तिशाली हो गया है। मैं तक अपने-आपको संभाल नहीं पा रहा हूं।...
फिलहाल यहां रुकना खतरे से खाली नहीं है। जब तक कोई रास्ता समझ में न आए, तब तक यहां से भाग लो!
हम तो भाग लेंगी!
क्या इसको रोकने का कोई तरीका नहीं गिओटो? क्या हम भागते रहेंगे, और यह हमको मारने के लिए हमारा पीछा करता रहेगा?
लेकिन हिटलर हमारा पीछा नहीं छोड़ेगा, गिओटो!
एक तरीका है नागराज! मुझको मारिया का शरीर छोड़कर जीवो के शरीर में प्रवेश करके हिटलर को उसके शरीर से बाहर निकलना पड़ेगा। लेकिन ऐसा मैं नहीं कर सकता। क्योंकि मारिया का शरीर मैं तभी छोड़ सकता हूं जब मैं तुरन्त किसी दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाऊं।
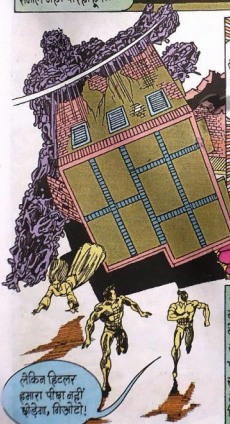
और 'हिटलर' मुझे जीवो के शरीर में उतनी जल्दी घुसने नहीं देगा। अगर मानव शरीर में प्रवेश करने में मुझे थोड़ी सी देर हुई तो मैं वापस दूसरे लोक में खिंच जाऊंगा...
... और जीवो के अलावा मैंने किसी और शरीर में प्रवेश किया तो वहां से मैं हिटलर की आत्मा का कुछ नहीं बिगाड़ पाऊंगा।
अगर तुमको ऐसा शरीर मिल जाए जो दूसरों के साथ हिटलर के शरीर में प्रवेश कर सके तो गिओटो?
तब तो बात बन जाएगी। लेकिन ऐसा शरीर किसका हो सकता है?

नागराज का! तुम नागराज के शरीर में प्रवेश कर जाओ। और फिर नागराज अपनी इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके अपने शरीर को कणों में बदल लेगा। ऐसे तुम मानव शरीर के अन्दर भी रहोगे और नागराज के कण जीवो के शरीर में प्रवेश भी कर जाएंगे!
नागराज अगर अपने शरीर को कणों में बदल ले, तब तो बात बन जाएगी। वैसे तो मैं किसी और के शरीर में प्रवेश नहीं कर सकता हूं। लेकिन अगर नागराज स्वयं मुझे अपने शरीर में आने की इजाजत दे तो मैं कोशिश कर सकता हूं...

नहीं, गिओटो, ध्रुव यह भूल रहा है कि कणों वाली स्थिति में मैं सिर्फ तीन पलों तक ही रह सकता हूं! उसके बाद या तो मुझे नागरूप धारण करना पड़ेगा या अपने मानवरूप में वापस आना पड़ेगा!
अगर मैंने तीन पलों तक ऐसा नहीं किया तो मेरे कण इधर-उधर बिखर जाएंगे और फिर मैं अपने असली रूप में कभी वापस नहीं आ पाऊंगा!
उसकी चिन्ता मत करो नागराज! मैं तुम्हारे शरीर कणों को बांधे रखूंगा!
लेकिन ऐसा करने से ध्रुव अकेला पड़ जाएगा, और 'हिटलर' इसका पीछा नहीं छोड़ेगा!

मैं अपनी देखभाल खुद कर लूंगा गिओटो! तुम अपना काम करो। पर जल्दी!
हिटलर पास आता जा रहा है!

गिओटो, मारिया का शरीर छोड़कर नागराज के शरीर में प्रविष्ट होने की कोशिश करने लगा—

आह! बहुत मुश्किल है। नागराज, तुम अपनी आत्मा के द्वारा मुझे अन्दर खींचो मैं तभी तुम्हारे शरीर में प्रवेश कर पाऊंगा, जब दोनों आत्माओं की शक्ति लगेगी!
काफी जद्दोजहद के बाद—

गिओटी, नागराज के शरीर में प्रवेश करने में सफल हो गया-
ठीक है गिओटी! अब मैं अपने शरीर को कणों में बदल रहा हूं। तुम उनको बांधे रखने के लिए तैयार हो जाओ!
और 'हिटलर' के कुछ समझ पाने से पहले ही, दोनों जीवों के मुख द्वारा उसके शरीर में प्रवेश कर चुके थे-
नागराज का शरीर कणों में बदलने लगा-
इस अचानक घटी घटना के बावजूद 'हिटलर' ने ध्रुव का पीछा नहीं छोड़ा-
मुझे इसे बेहोश मारिया से दूर ले जाना होगा।
लेकिन इससे पहले कि ध्रुव भी आत्माओं की जमात में शामिल हो जाता-
हिटलर का ध्यान भटकाने की कोशिशें शुरू हो चुकी थीं-
जीवो के शरीर के अन्दर-
गिओटी! तू...तू... मारिया का शरीर छोड़कर जीवो के शरीर के अन्दर कैसे आ गया?
'कैसे' नहीं, 'क्यों' पूछ, दुष्ट! और उसका जवाब है, तुझे जीवो के शरीर से बाहर निकालकर...

...तुझे तेरी सही जगह पर ले कर जाना है मुझे। नर्क में।

मुझे यहां से ले जाने का ख्याल छोड़ दे गिओटो...

...मैं न तो इस शरीर से बाहर निकलूंगा और न ही तुझे इस 'जीवो' के शरीर को कोई नुकसान पहुंचाने दूंगा।

और तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा।

क्योंकि अब मेरे पास सिर्फ एक नहीं, बल्कि लाखों आत्माओं की ऊर्जा है।...

...और जल्दी ही मेरे पास अरबों आत्माओं की ऊर्जा होगी। और फिर परमात्मा भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। याद है न? यह बात मैंने पहले भी कही थी, पर तब तू माना नहीं था।

अब देख! तेरा पाश तो मुझे बांध नहीं पाया, पर मेरा पाश तुझे बन्दी बना कर ही रहेगा!

इसकी शक्ति सचमुच असीमित हो गई है नागराज! मैं इसका मुकाबला नहीं कर पाऊंगा। अब तो सब कुछ ईश्वर के हाथ में है!

लेकिन कहते हैं कि ईश्वर खुद कभी नहीं आता—

बल्कि किसी न किसी को अपना साधन बना देता है—

ऐसे बचते रहने की कोशिश करने से कुछ नहीं होगा। मुकाबला करना होगा। लेकिन इस विराट राक्षस का मुकाबला करूं तो कैसे करूं?

जैसा बिजोटो ने मुझे बताया था इसकी मुख्य शक्ति वह वायरसों की टोली है, जो अपने मदर वायरस से, इन मानवों के मस्तिष्क द्वारा संपर्क बनाए रखती है।
और इसी शक्ति के कारण 'हिटलर' द्वारा यह रूप बनाए रखना संभव ही पाया है। अगर मैं किसी तरह से इस वायरस को निष्क्रिय कर सकूं तो हिटलर के लिए यह रूप बनाए रखना संभव नहीं हो पाएगा!
लेकिन यह काम होगा कैसे? वैसे तो विषाणुओं को निष्क्रिय करने के लिए उनके द्वारा संक्रमित वस्तु को जमीन में दबा दिया जाता है।... ओह! समझ में आ गया रास्ता!
जब यह वायरस इस क्षेत्र में फैल रहे थे, तब हम यहीं पर थे। लेकिन हम तक ये वायरस इसीलिए नहीं पहुंच पाए क्योंकि हम जमीन के नीचे दबे थे। दलदल के अन्दर!
इस वायरस के असर से इन मानवों के मस्तिष्क मानसिक तरंगें छोड़ रहे हैं। अगर यह सारे मानव मिट्टी से ढक जाएं तो इन वायरसों का यह असर निष्क्रिय हो जाना चाहिए!
वैसे भी यह करके देखने में कोई हर्ज नहीं है!
और अगले ही पल ध्रुव एक खास दिशा में दौड़ गया—
अगर मुझे ठीक याद है तो इधर ही खुले नल से इतना पानी गिर रहा था कि जमीन कीचड़ में बदल गई थी...
'हिटलर' भी ध्रुव के पीछे-पीछे भागा—
और फिसलन भरी कीचड़ पर अपना संतुलन खोकर नीचे आ गिरा—
धपाक

जरूर ध्रुव ने बाहर ऐसा कुछ किया है जिससे इसका बाकी आत्माओं से संपर्क कट रहा है। अब यह एक आत्मा है, और हम दो। अब यह हमसे जीत नहीं सकता!

इस बार गिओटो के पाश से हिटलर निकल नहीं पाया–

अब चलने का वक्त आ गया है हिटलर! तेरे साथ-साथ मैं इस 'मदर वायरस' को भी जीवी के शरीर से बाहर निकालकर सूर्य में फेंक दूंगा...

...जहां यह अपने-आप जलकर नष्ट हो जाएगा!

जिनमें से एक तो नागराज के रूप में बदल गई-

दूसरी किरण की शक्ति उस 'मदर वायरस' को लेकर सूर्य की तरफ बढ़ गई-

और तीसरी किरण, आकाश में लहरें बनाती हुई उसी भंवर में गायब हो गई-
इन लोगों के अंदर का वायरस भी अब निष्क्रिय है।
मैं चलता हूं। विदा!
यह गिओटी की आत्मा थी जो हिटलर को अपने साथ लेकर वापस परलोक पहुंच चुकी थी-

मदर वायरस के नष्ट होते और हिटलर की आत्मा के जीवो के शरीर को छोड़कर जाते ही सब तेजी से सामान्य हो गया-
हम सब एक के ऊपर एक क्यों चढ़े हुए हैं?
'हिटलर' के विशाल रूप में शामिल 'चंडिका' और 'ब्लैककैट' भी आजाद होकर बाहर निकल आईं-
ये क्या हो रहा है?
सभी एक दूसरे से सवाल कर रहे थे-

और इनमें मारिया भी शामिल थी-
य... यह सब क्या हो रहा है?
मां!
आओ, मारिया! अब चुपचाप यहां से निकल लो!...
...वर्ना इतने सवाल उठेंगे कि उनका जवाब भी हम नहीं दे पाएंगे!

तुम मेरा नाम कैसे जानते हो? कौन हो तुम लोग? और... हम यहां कैसे आ गए?
हम आपको वीटी के पास लेकर चल रहे हैं। और बाकी सवालों के जवाब आपको रास्ते में मिल जाएंगे।

चंडिका और ब्लैककैट को भी साथ लेकर सभी वापस राजनगर की तरफ बढ़ चले-
एक तानाशाह की तानाशाही को शुरू होने से पहले ही खत्म करके-

समाप्त.